# पिताका प्रेम

पूज्य बापूजीके अपार पत्र-साहित्यमें बहनोंको लिखे गये पत्रोंका ढंग कुछ निराला ही है। ये सब पत्र अिकट्ठे करके प्रकाशित करनेका काम नवजीवन प्रकाशन संस्था कर रही है। बहनोंके नाम लिखे गये पत्रोंका सम्पादन करनेकी जिम्मेदारी संस्थाने मुझे सौंपी है। तदनुसार पहला भाग[1] प्रकाशित हुये चार बरस हो गये। दूसरे दो भाग मुझे कभीके तैयार कर देने चाहिये थे। परन्तु अनेक कारणोंसे यह काम मैं पूरा नहीं कर सका। जल्दीसे जल्दी असे हाथमें लेनेवाला हूं। जिनमें पूज्य गंगाबहन (वैद्य) को और श्री प्रेमाबहन कंटकको लिखे गये पत्र आ जायेंगे।

यह काम हाथमें लेनेका विचार मैं कर ही रहा था कि अितनेमें श्री कुसुमबहन देसाअी अेक बार दिल्लीमें मिलीं। पू॰ बापूजीके सम्पर्कमें आनेवाली तमाम बहनोंसे मैं असे पत्र मांगता ही हूं। श्री राजकुमारी-अमृतकौर, कुमारी अमतुस्सलाम तथा श्री प्रभावतीबहनके पास बापूके पत्रोंका ढेर पड़ा है। वे अुन्हें जमा करके दें तब सही। श्री मीराबहनने अपने नाम लिखे हुये पत्रोंमें से कुछ पसन्द करके काफी समय पहले प्रकाशित कर दिये हैं[2]।

श्री कुसुमबहनने अपने नाम लिखे हुये पत्र तुरन्त अिकट्ठे करके दे दिये और अिस सम्बन्धमें काफी हुअी जानकारी भी दी। अिन मूल पत्रोंके फोटोग्राफ लेकर यहांके संग्रहालयमें सुरक्षित रखनेका काम तो

---

१ बापूके पत्र—१ आश्रमकी बहनोंको नवजीवन प्रकाशन कीमत १ २५ डाकखर्च ११।

२ ये पत्र बापूके पत्र मीराके नाम शीर्षकसे अिसी संस्थाने प्रकाशित किये हैं। कीमत १ डाकखर्च ११९।

तुरन्त किया परन्तु प्रकाशित करनेके लिअे नवजीवनके पास भेजनेका काम मैं जल्दी नहीं कर सका जिसका मुझे खेद है। जिसमें दरअसल करने जैसा बहुत नहीं था। कुसुमबहनने पत्रोंकी नकलें करके और व्यवस्थित ढंगसे जमा कर सारी सामग्री मेरे पास भेज दी थी। मुझे अुसे देखकर केवल प्रस्तावना ही लिखनी थी। मुझे खुशी है कि देरसे ही सही यह प्रस्तावना लिखकर यह पत्र-संग्रह आज प्रकाशित करने भेज रहा हूँ। पूज्य गंगाबहन तथा प्रेमाबहनके पत्र पहले हाथमें लिये थे। पर अुन्हें अभी तक तैयार नहीं कर सका जिसके लिअे जिन अुदार बहनोंसे मैं क्षमा मांगता हूँ।

* * *

गुजरातके सामाजिक जीवनमें श्री हरिलाल माणेकलाल देसाअीके साथ श्री कुसुमबहनके विवाहका खास महत्त्व है। शैक्षणिक और सामाजिक कार्योंमें लगे हुअे हरिभाअी देसाअीकी संस्कारिताकी सुगन्ध सारे गुजरातमें फैली हुअी थी। गांधीजीके आश्रममें समय समय पर आते रहनेसे और गांधीजीके साथ सफरमें रहकर अुनके कामका अवलोकन करनेसे हरिभाअीके मनमें आश्रम-जीवनके प्रति सजीव आकर्षण पैदा हुआ था। समाजकी सच्ची नींव कौटुम्बिक जीवनकी संस्कारितामें है, यह दृढ़ प्रतीति हो जानेसे हरिभाअी अनेक परिवारों पर और खास तौर पर अनेक बहनों पर संस्कारिताका असर डाल रहे थे। और अिस प्रकार गुजरातके सामाजिक जीवनमें अपना योग दे रहे थे।

आश्रम-जीवनका आदर्श रखनेवाले हरिभाअी अपनी पहली पत्नीके देहान्तके बाद दुबारा शादी करें और वह भी अपनी अुमरसे बहुत छोटी कन्यासे करें यह असंभव सी बात थी। फिर भी अुनकी शिष्या कुसुमबहनने अुसे संभव करके बता दिया। कुसुमबहनकी माता बड़ाबहनको यह बात पसन्द आअी जिस तथ्यका भी अिसमें महत्त्वपूर्ण भाग रहा।

जिन हरिभाअीसे अुच्च संस्कार मिले जिनके कारण शिक्षा और साहित्यका रस अुत्पन्न हुआ और जिनके बनाये हुअे मित्र-मंडलका शुभ वातावरण पसन्द आया अुनके साथ ही जीवन भरके लिअे जुड़ जानेका संकल्प कुसुमबहनने किया। और अुसे पूरा करके गुजरातके सामाजिक

जीवनमें अुन्होंने अेक नयी रीतिका सूत्रपात किया। श्री हरिभाअीके साथ श्री कुसुमबहन जिस प्रकार कोअी सात वर्ष तक दाम्पत्य जीवन बिता सकीं और विशेष अुच्च जीवनकी ओर प्रयाण करते हुअे हरिभाअीके जीवनके साथ साथ मिला सकीं।

श्री हरिभाअीके स्वर्गवासके बाद कुसुमबहनका गांधीजीके आश्रममें आना बिलकुल स्वाभाविक था। और यहां दिये गये गांधीजीके पत्रोंका प्रारंभ कुसुमबहनके वैधव्यसे अथवा आश्रम-जीवनसे ही शुरू होता है।

लगभग बीस वर्षके अिस सम्बन्धके दौरानमें पूज्य बापूजी और पूज्य बाने कुसुमबहनके नाम जो पत्र लिखे थे अुनका यह संग्रह है। कुसुमबहनके आश्रम-जीवनकी अेक दो खूबियां ध्यान देने लायक हैं। अेक तो पूज्य बाका और अुनका मां-बेटी जैसा विशेष प्रेम-सम्बन्ध। और दूसरी चीज आश्रममें शरीक होकर भी स्वतंत्र रूपसे हरिभाअीकी स्नेहीमंडलीमें मिलकर अुस मंडलीका काम आगे बढ़ानेकी कुसुमबहनकी वृत्ति या प्रवृत्ति।

आश्रम-जीवनमें किस हद तक घुला-मिला जा सकता है और गांधीजीके कार्योंमें से किसका भार अुठाया जा सकता है और किसका नहीं अिसका सूक्ष्म विवेक कुसुमबहनमें था। वे अपनी शक्ति और अुसकी मर्यादा दोनों अच्छी तरह जानती थीं अिसीलिअे अुन्हें अपनी वृत्ति या प्रवृत्तिके सिलसिलेमें कभी परेशानी नहीं अुठानी पड़ी।

यहां जो १ १ पत्र अिकट्ठे किये गये हैं वे सन् १९२७ से लेकर सन् १९४६ तकके हैं। अिनमें से अेक भी पत्र सार्वजनिक प्रकाशनकी दृष्टिसे नहीं लिखा गया था। और अिसीलिअे खास जनताके लिअे अुनका विशेष महत्त्व है क्योंकि अुनसे अनेक पहलुओं पर गांधीजीने जो पिताका प्रेम अुड़ेला है अुसका शुद्ध दर्शन होता है।

बापूजीका यह दावा था कि अीश्वरने अुन्हें स्त्रीका हृदय दिया है और अिसीलिअे वे स्त्रियोंकी परेशानी और अुनके अनेक प्रश्न समझ सकते हैं। स्त्रियां अुनके आगे अपना हृदय अुंडेलनेमें संकोच अनुभव नहीं करती थीं।

आश्रमके आबाल वृद्ध — क्या पुरुष और क्या स्त्रियां — प्रत्येककी तबीयत और तंदुरुस्तीके बारेमें बापूजीके मनमें सच्ची चिन्ता रहती थी। और अुस चिन्तामें से ही अुन्होंने आरोग्यशास्त्रके विषयमें गहरा और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। अिसी अनुभवसे प्राप्त अपने अिस ज्ञानमें बापूजीका विश्वास भी बहुत था। किस फलका क्या असर होता है किस फलका काम किस दूसरे फलसे निकल सकता है, यह सब वे अचूक ढंगसे जानते थे। अेनिमा-पिचकारी कटिस्नान पेट पर और सिर पर रखनेकी मिट्टीकी पट्टियां बुखारसे पीड़ित मनुष्यको चादरमें लपेटनेका अुपाय अुपवास और धूपके प्रयोग — सब बातोंकी अुनकी सूचनायें लगभग हमेशा कारगर साबित हुअी हैं।

जैसे शरीरकी संभाल रखनी होती है वैसे ही — बल्कि अुससे भी ज्यादा — मनकी देखभाल जरूरी होती है। बापूजी बहुत लोगोंको अपनी दैनन्दिनी लिखकर बड़ोंको दिखानेकी सूचना देते थे। अहंकार छोड़ कर शून्य बनकर रहनेसे घर-गृहस्थीमें और संस्था-संचालनमें भी कमसे कम क्लेश और झगड़ा होता है और मानसिक शांति लगभग नहींके बराबर होती है। बूतेसे बाहर जाकर काम न करनेका निश्चय करनेसे भी शरीर और मन दोनोंका स्वास्थ्य कायम रहता है और अहंकार तथा चिड़चिड़ता दोनोंकी गुंजाअिश नहीं रहती।

मनुष्य अपनी वासनाके वशमें हो जाय और जो चाहे वैसा व्यवहार करने लगे तो देखते देखते अुसका नाश हो जायगा। अैसी अराजकता (अव्यवस्था) और अवशतासे बचना हो तो मनुष्यको अपने पर काबू हासिल करके स्व-तंत्र होना चाहिये। बापूजीने अपना अुदाहरण पेश करते हुअे कहा है कि वे स्वयं भी अिसी ढंगसे स्वतंत्र हो सके हैं।

बापूजीके अधिकांश पत्र यरवडा मन्दिर — अर्थात् जेल — से लिखे गये हैं। थोड़ेमें बहुत कैसे कहा जाय यह जाननेकी जिज्ञासा रखनेवालेके लिअे ये पत्र अुत्तम नमूने हैं।

जेलमें जो अवकाश और सुविधा मिलती है अुसका अुपयोग करके संस्कृत गुजराती आदि भाषाओं और साहित्यमें प्रगति करनेकी सूचना करनेमें वे कभी चूकते नहीं थे। अुच्चारण-शुद्धि और लेखन-शुद्धि पर

गांधीजी बड़ा जोर देते थे। अेक बार अुन्होंने यहां तक कहा था कि भोजन-शुद्धिके लिअे चरित्र-शुद्धिके बराबर ही आग्रह रखना चाहिये।

जेलमें जो लोग नियमित रहते हैं अुन्हें अपनी शक्तिका ठीक अन्दाजा हो जाता है। अिसका फायदा अुठाकर जेलसे बाहर निकलते समय कोअी व्रत लेकर निकलनेकी गांधीजीकी सलाह होती थी। जीवनकी प्रत्येक घटनासे अधिकसे अधिक श्रेय प्राप्त करनेका अुनका आग्रह होनेके कारण पिकेटिंग जैसे नशाबंदीके आन्दोलनके समय भी वे सूचित करते थे कि शराबकी दुकान पर पीनेवालोंके साथ जो बातचीत होती है अुससे लाभ अुठाकर धीरे-धीरे अुन पीनेवालोंके घरमें प्रवेश किया जाय और घरके सब लोगों पर असर डालकर शराबकी बुराओीको घरसे सदाके लिअे निकाल दिया जाय।

गांधीजीने स्वयं सुबह-शामकी प्रार्थना या अुपासनासे बहुत बड़ी शक्ति प्राप्त की थी। अिसलिअे वे अिस बातका आग्रह करते हुअे अूबते या थकते नहीं थे। "श्रद्धा पैदा करके प्रार्थनामें जाकर बैठो और धीरे धीरे अुसमें तल्लीन होना सीखो और अुपासनाकी आदत पड़ जानेके बाद प्रार्थनाके श्लोकोंके गहरे अर्थका मनन करो"—यह अुनकी सीख है।

हिन्दू समाजमें स्त्री-पुरुषोंके सम्बन्धके बारेमें आम तौर पर जो मान्यतायें और मर्यादायें होती हैं अुनमें सुधार करके पवित्र वातावरणमें अनेक स्त्रियां और पुरुष अपनी स्वच्छताकी रक्षा करते हुअे रह सकें अिस प्रकारका प्रयोग आश्रम द्वारा गांधीजीने किया था। अैसे प्रयोगोंमें कभी कभी अच्छे-बुरे अनुभव भी होते हैं। अिस बारेमें कोअी दुराव-छिपाव किये बिना वातावरण शुद्ध करनेका गांधीजीका आग्रह होनेके कारण वे अत्यन्त सुन्दर वातावरण पैदा कर सके और कायम रख सके। भारतीय सामाजिक जीवनके लिअे गांधीजीकी यह सबसे मूल्यवान भेंट है।

*  *  *

अिस पत्र-संग्रहमें कुसुमबहनको लिखे गये पू० कस्तूरबाके कुछ पत्र भी हैं। अिन पत्रोंसे पू० बाके आश्रम-जीवनकी और सब आश्रमवासियोंके प्रति अुनकी आत्मीयताकी अच्छी कल्पना होती है।

अेक बातका स्पष्टीकरण यहां करना ठीक होगा। कअी पत्रोंमें कुसुमबहनको 'तुम' लिखनेके बाद बीचमें अेक दो जगह 'तुम' अैसे शब्द और 'कुसुमबहन' अैसे संबोधन आते हैं। बाके स्वभावमें यह चीज स्वाभाविक थी। मेरे साथ बातें करते समय वे मुझे हमेशा 'तुम' कहती थीं। परन्तु किसी दिन भूलसे मुझे 'आप' भी कह देती थीं। मैं अिस ओर अुनका ध्यान खींचता तो कहतीं 'भूल गयी।' सबके प्रति आदरभाव रखना चाहिये अिस प्रकारकी अुनकी साधना होनेसे अैसी दिलचस्प भूलें होती थीं। अिसका प्रतिबिम्ब अिन पत्रोंमें भी पाया जाता है।

श्री कुसुमबहन अैसी बहनोंने अपने नाम लिखे हुअे पू० बापू और बा अैसी पुण्यात्माओंके पत्र संग्रह करके रखे और समाजके लाभार्थ अुन्हें प्रकाशित करनेकी अनुमति दी यह सचमुच बड़े आनन्दकी बात है। अन्यथा बापूजीके जीवनके कुछ पहलू दुनियाको दूसरी तरह जाननेको नहीं मिलते।*

नयी दिल्ली
१६-१२-५१

काका कालेलकर

---

* मूल गुजरातीकी प्रस्तावना।

बापूके पत्र — ३

# कुसुमबहन देसाओीके नाम

[ता० २२-[illegible]-२७ से २१-१-'४८ तक]

बेतिया
वैसाख बदी ५
(डाकको मुहर १९–५–१७)

भाई श्री हरिलाल देसाई

आपका पत्र मुझे यहां मिला है। आपका मिलना मुझे भाव है। आपको मेरे साथ यहां रहना हो तो रह सकते हैं। मेरे कुछ मास इस प्रदेशमें जायेंगे। अहमदाबादमें मेरी गैरहाजिरीमें आप रहना चाहें तो वैसा भी किया जा सकता है। आपको अनुकूल हो वैसा कीजिये। यहां आप भागलपुर होकर या पटना होकर आ सकते हैं।

मोहनदास गांधीके
वन्देमातरम्

# १

बंगलोर,
अ. व. ८, सं. १९८३
२२-७-२७

चि. कुसुम

हरिभाअीके बारेमें तुम्हें क्या लिखूं? तुम्हींको अुनका वियोग खटकेगा सो बात नहीं। बहुतोंको दुःख हुआ है। परन्तु यह सहन करने योग्य है। सब अपने अपने समय पूरा होते हैं। हमें भी यही करना है। अितनी बात भी तुम्हें लिखनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि तुमने बहुत बड़ी हिम्मत दिखाअी है, अैसा भाअी नानुभाअी[1] लिखते हैं। और हरिभाअीसे शिक्षा पानेवालेको यही शोभा देता है। क्योंकि तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा शिष्या अधिक थी।

अब क्या करनेका सोचती हो? मुझे खयाल नहीं है कि तुम्हारे माता-पिता आदि हैं या नहीं। जो स्थिति हो बताना। आश्रममें रहना चाहो तो यह भी बताना। कुछ निःसंकोच लिखना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री नानुभाअी मंगलाल चोकसी। अुस समय भड़ौच सेवा-आश्रम शिक्षकका काम करते थे।

## २

बंगलोर,
२९-७-२७

चि. कुसुम

तुम्हारे पत्रकी मैं प्रतीक्षा करता ही रहता था। कुछ हाल तो मुझे चि. वसुमतीने लिखा था। अब तुम्हारे पत्रने पूर्ति कर दी।

हरिभाईके विद्यार्थियोंको संभाल कर तुम बैठ जाओ और वे तुम्हें संभालें और तुम्हारी रक्षा करें इससे अच्छा और मैं कुछ नहीं समझता। परन्तु यह काम तुम उठा सकती हो या नहीं यह तो तुम्हीं ज्यादा जान सकती हो। मैं देखता हूं कि तुम जितनी हरिभाईकी पत्नी थीं उतनी ही शिष्या भी थीं। तुम्हारा मन कहां तक तैयार हुआ है यह तो तुम और तुम्हारे हितेच्छु, यानी हम सब अनुभवसे ही जानेंगे। अपने मनका हमें हमेशा पता नहीं होता।

चि. वसुमतीके तथा भाई जमनादास गांधीके पत्रसे देखता हूं कि तुम्हारे विवाहमें तुम्हारा काफी हाथ था। हरिभाईसे ही विवाह करनेका आग्रह तुम्हारा ही था। तुम अपने चुनावको अनेक प्रकारसे सुशोभित कर सकती हो। जो लड़की अपनेसे बहुत बड़ी उमरके पुरुषको पतिके रूपमें पसन्द करती है वह शरीरको नहीं परन्तु उस शरीरके स्वामीको पसन्द करती है। हरिभाईका शरीर चला गया। परन्तु वे स्वयं तो तुम्हारे पास आज भी हैं और तुम चाहो तब तक रहेंगे।

मुझसे जो पूछना हो पूछ लेना। जिस मासके अन्त तक मैं बंगलोरमें ही हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व. ठाकर श्री नवलराम लक्ष्मीरामकी पुत्रवधू। बरसोंसे कुछ समय हमारे साथ रही थी। कुछ समय साबरमती आश्रममें रहती थी।

२ साबरमती आश्रमवासी तथा आश्रमके मंत्री।

## ३

बारडोली
२-८-२८

चि॰ कुसुम (देसाअी)

तुझे मैं क्या लिखूं? जिस तन्मयतासे जितने दिन काम किया अुसी तन्मयतासे आगे भी करना। स्वास्थ्यको संभालना। मुझे तेरी सारे दिनकी डायरी चाहिये।      को प्रेमसे नहलाना। तुझमें असत्य देखकर मुझे अत्यंत दुःख हुआ है।

तेरे नियमित पत्रकी मैं प्रतीक्षा करूंगा। पाठशालामें और रसोअी घरमें सुगन्ध फैलाना।      बहनको दुःख न लगना चाहिये।

यहांके बारेमें आज अधिक लिखने जैसी कोअी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

## ४

स्वराज्य आश्रम
बारडोली
४-८-२८

चि॰ कुसुम (देसाअी)

तेरा पत्र मिला है। रोजकी नियमित डायरी तो चाहिये ही। हर दिन लिखते रहनेसे आदत पड़ जायगी। लिखना तो आता ही है। किया हुआ काम आये हुअे विचार, और होनेवाले अनुभव लिख लेनेमें बहुत कुशलताकी जरूरत ही कहां है?

बारडोलीके समाचार जो दे सकता हूं वे छगनलाल (जोशी) के पत्रमें दिये हैं।

कहा जा सकता है कि मैं तो अभी आराम ही ले रहा हूं। राजकिशोरी क्या करती है?

बापूके आशीर्वाद

---

१ राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबूके द्वारा साबरमती आश्रममें शिक्षा लेने आयी हुअी बिहारकी अेक बहन।

## ५

बारडोली
५-८-'२८
रविवार

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला। फिर दुखा यह विचित्र बात है। तबीयत सम्हालना।

भाभी स्वीकार क्यों नहीं करते जिस बारेमें तुझे विचार करके कुछ कहने जैसा मालूम हो तो कहना। क्या यह संभव है कि कहीं तेरे सुननेमें भूल हुओ हो? मैंने तो मामीको मुक्त करनेकी ही बात दुबारा लिखी है।

बाल-मन्दिरकी व्यवस्था किस प्रकार हुओ है सो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

## ६

बारडोली
९-८-'२८

चि॰ कुसुम

तू अभी तक अच्छी नहीं हुओ ऐसा मीराबहन लिखती है। तेरा पत्र आज नहीं आया जिससे अुसके पत्रकी बातका समर्थन होता है। विचारोंके चक्करमें तो नहीं पड़ गयी न?

समझौता[1] हो गया ही समझो। जिसलिये थोड़े ही समयमें वापस आ जाअूंगा। परन्तु सोचा था अुससे कुछ अधिक ठहरना पड़ेगा। वल्लभभाओकी यही जिच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ बारडोलीकी सत्याग्रहकी लड़ाओके समझौतेका अुल्लेख है।

## ७

बारडोली
७–८–२८
मंगलवार

चि. कुसुम (देसाई)

तेरा पत्र मिला। तुझे समझानेमें मुझे कठिनाई हो रही है। तू मुझे विनयकी भाषा तो हरगिज न सिखाती। तुझे डायरी लिखना नहीं आता यह सच नहीं। तेरा पत्र लम्बा हो गया है और छोटा लिखना नहीं आता यह भी मिथ्या विनय है। तेरे पत्र सब बढ़िया हैं। उन्हें मैं तो छोटा नहीं कर सकता। और छोटे-लम्बेका भेद मैं अच्छी तरह समझता हूं। इसलिये यदि तेरा यह आत्म-अविश्वास सचमुच ही सही हो तो उसे निकाल देना। और केवल विनयके लिये आत्मनिन्दा करती हो तो वह निन्दा बन्द कर देना।

मातीका मामला अब निपट गया दीखता है। ने अपना दोष स्वीकार कर लिया मालूम होता है। यह लिखकर अभी तक मेरे पास सीधा नहीं आया परन्तु जान पड़ता है कि सुरेन्द्र[1] और छोटेलालके[2] सामने दोष स्वीकार कर लिया है। तेरा अदा किया हुआ भाग जरूर बढ़िया है।

बाल-मन्दिरका काम अच्छा लगता है। अब यदि उसमें लगी रहोगी तो काम जरूर आगे बढ़ेगा।

अपनी तन्दुरुस्ती सम्हालना।

---

१ साबरमती आश्रमवासी। अब बोरियावीको अपना कार्यक्षेत्र मानकर वहां रहते हैं। पू. बापूजीकी अस्थिका विसर्जन करने मानसरोवर गये थे।

२ साबरमती आश्रमवासी। पू. बापूजीके सिद्धान्तोंका चुस्तीसे पालन करनेवाले।

अिस सप्ताहके अन्तमें या दूसरेके शुरूमें वहां[1] पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

आजकल कम सूजी है?

बापूके आशीर्वाद

८

बारडोली
८-८-२८
बुधवार

चि॰ कुसुम

शारदा[2]को तुम जवाब दिया यह संयोग तो अवश्य है। अुसमें रहस्य भी है।

मेरा जवाब यह है। आश्रमी कौन है या कौन नहीं यह मैं नहीं जानता परन्तु लड़कियां खूब जानती हैं। परन्तु मैं जिसे लिखना जरूरी समझता हूं अुसे लिखता हूं अथवा जो आशा रखे अुसे लिखनेका प्रयत्न करता हूं। यह शारदाको समझाना और वह आशा रखे तो मुझे लिखे।

स्त्री-विभाग[3]में चोरी होती है तो चोरको ढूंढ निकालनेकी शक्ति तुम लोगोंमें होनी चाहिये। क्या चुराया वह मुझे लिखना चाहिये था।

अिस किसकी जो जो चीज चली गयी हो अुसकी सूची मुझे भेजो। यह भी बताओ कि शक किस किस पर है।

कदाचित् यहां रविवारको पहुंचूं, अथवा अगले सप्ताहके शुरूमें तो किसी दिन जरूर।

बापूके आशीर्वाद

---

१ साबरमती आश्रममें।

२ श्री शारदाबहन कोटक। अेक आश्रमवासिनी।

३ साबरमती आश्रममें अलग अलग जगहोंसे बहनें रहने आती थीं। अुनके लिअे अेक विशेष विभाग रखा गया था—अभी वहां हृदय-कुंज है वह स्थान।

आश्रममें रतिराम[1] है। अुसके दांत खराब हो गये हैं। अुसे भडौचमें जिसके नाम पत्र देना जरूरी हो अुसके नाम पत्र देना। वह वहां जाय और दांत दिखाकर दवा ले आवे। जहां तक हो सके डॉक्टर कुछ करनेको न कहे, यह जिसके पास जाय अुसे लिख देना। डॉक्टरको लिखना कि क्या रोग है यह तुझे लिखे। और अुपचारके बारेमें रतिरामसे कहे, फिर भी तुझे तो लिखे ही।

बापू

९

२१-११-२८

चि॰ कुसुम

जहां मेरा काम हो वहां मैं हूं यह समझना चाहिये।

तंत्रमें रहनेके नियम तो जो होते हैं वे ही हो सकते हैं। तंत्रमें रहकर तो अनेकोंकी अनुमति लेनी पड़ती है। स्वतंत्रताका अर्थ स्वेच्छाचार कभी नहीं होता अथवा किसी अेक ही व्यक्तिका आचार भी नहीं होता।

समाजमें रहनेवालेको तो समाजके अधीन रहना चाहिये। अिसीका नाम संस्था है। अन्यथा तो अेकका राज्य हुआ। अिसका रहस्य समझकर तू शान्त हो और कर्तव्य-परायण बन यही मैं चाहता हूं।

शरीरको अच्छी तरह संभालना। सबके साथ मैत्री पैदा करना। मनु[2]के बारेमें तुझे यदि बाल-मंदिरमें और रसोडेमें रहना पसंद पड़े तो तू अुसे पूरा सन्तोष देना।

मुझे पत्र नियमित रूपसे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ आश्रममें खादीका काम सीखने आया हुआ चरखा-संघका अेक विद्यार्थी।

२ गांधीजीकी पोती। हरिलाल गांधीकी लड़की।

## १०

वर्धा,
२७-११-'२८

चि कुसुम

तेरे दोनों पत्र मिल गये। मुझे तो बुखारका डर था ही। अब न आने देना। चिरायतेका या सुदर्शन चूर्णका सेवन करे तो अच्छा अथवा कुनैन लेते रहना और साथमें कटि-स्नान।

दो तीन जगह पूछना पड़े जिससे तुझे आश्चर्य हुआ। अेक मंत्रीसे ही पूछा जाय यह तो ठीक है। परन्तु भिन्न भिन्न विभागमें काम करते हों अुस विभागके मुखियाको अवश्य पूछना चाहिये। बड़ी संस्थामें अकेला मंत्री छुट्टी देनेकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता। अुसके पास छुट्टीकी मांग भी अुन अुन विभागोंके मुखियाओंके द्वारा ही आती है। संस्थाके प्रति जो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं वे सुविधा देखकर ही छुट्टी मांगते हैं।

मैंने कितनी बार समझाया है कि जिसे सब कुछ प्रेमभावसे करना है अुसका काम पुण्यवत् तुझे बिना चल ही नहीं सकता? प्रेम नम्रताकी पराकाष्ठा है। आज तो यह विषय यहीं समाप्त करता हूं।

मनु (गांधीजीकी पोती)के बारेमें बा चिन्ता करती रहती है। अुसके बालोंमें कंघी कौन करता होगा? अुसके कपड़ोंका क्या होता होगा? वगैरा अनेक प्रश्न बा किया करती है। मैंने बासे कहा है कि तू यह सब खुद या किसीकी सहायतासे कर लेती होगी।

सरोजिनी देवी[1] तो अपना नाम काममें बता करती ही होगी। वह प्रसन्न तो रहती है?

मेरा हाथ पोंछनेका रूमाल वहां रह गया है। प्रभावती[2] जानती होगी। ढूंढ़ना। मिल जाय तो संभाल कर रख लेना।

---

१ अुत्तर प्रदेशके कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री शीतलासहायकी पत्नी।

२ श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी। अुस समय श्री जयप्रकाश नारायण विदेशमें थे। हम दोनों बहनें आश्रममें अेक ही कमरेमें साथ रहती थीं।

स्वास्थ्य बिगाड़ेगी तो ठीक नहीं होगा।

सुरजबहन[1] के बारेमें मैंने तो तुरन्त ही तार भेजा था परन्तु भगवान जाने वह मिला क्यों नहीं।

बापूके आशीर्वाद

## ११

वर्धा
१-१२-२८

चि कुसुम

तू मूर्ख है नहीं क्यूं न? तुझे पूछा अिसमें तू दुःखी किसलिये हुअी? अिस तरह दुःख मानने लगेगी तो मैं कैसे कुछ पूछ सकूंगा?

मैं तो जो मान्यता मैंने तेरे बारेमें बना ली है वैसी ही तुझे सदा ही देखना चाहता हूं। अधिक लिखनेका आज समय नहीं है।

मनु (गांधीजीकी पौत्री) की तू अच्छी तरह संभाल रखती अिस बारेमें मेरे मनमें तो कोअी शंका है ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

## १२

वर्धा
५-१२-२८
बुधवार

चि कुसुम

तेरा पत्र मिला। वहांके ब्यौरेवार समाचारोंकी मैं तुमसे आशा रखता हूं। रसोअीघरके समयका पालन होता है? और कम हुआ है?

गंगाबहन[3] को सब मदद देते हैं?

---

१ श्री कृष्णदास चोलाजिम्याके मारफत आश्रम-जीवनका अनुभव लेने आअी हुअी अेक बहन।

२ साबरमती आश्रमके।

३ वैद्य। आजकल बोचासण वल्लभ-विद्यालयमें रहती हैं। साबरमती आश्रममें पू. बापूजीने संयुक्त रसोअीघरकी जो योजना की थी अुसकी व्यवस्था यही गंगाबहनके पास थी।

# १०

वर्धा,
२७-११-२८

चि॰ कुसुम

तेरे दोनों पत्र मिल गये। मुझे तो बुखारका डर था ही। अब न आने देना। चिरायतेका या सुदर्शन चूर्णका सेवन करे तो अच्छा अथवा कुनैन लेते रहना और शाममें कटि-स्नान।

दो तीन जगह पूछना पड़े जिससे तुझे आश्चर्य हुआ। अेक मंत्रीसे ही पूछा जाय यह तो ठीक है। परन्तु जिस जिस विभागमें काम करते हों अुस विभागके मुखियाको अवश्य पूछना चाहिये। बड़ी संस्थामें अकेला मंत्री छुट्टी देनेकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता। अुसके पास छुट्टीकी मांग भी अुन अुन विभागोंके मुखियाओंके द्वारा ही जाती है। संस्थाके प्रति जो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं वे सुविधा देखकर ही छुट्टी मांगते हैं।

मैंने कितनी बार समझाया है कि जिसे सब कुछ प्रेमभावसे करना है अुसका काम पूर्ववत् हुवे बिना चल ही नहीं सकता? प्रेम नम्रताकी पराकाष्ठा है। आज तो यह विषय यहीं समाप्त करता हूं।

मनु (गांधीजीकी पोती)के बारेमें तू चिन्ता करती रहती है। अुसके बालोंमें कंघी कौन करता होगा? अुसके कपड़ोंका क्या होता होगा? वगैरा अनेक प्रश्न तू किया करती है। मैंने बासे कहा है कि तू यह सब खुद या किसीकी सहायतासे कर लेती होगी।

सरोजिनी देवी[1] तो अपना भाग काममें अदा करती ही होगी। वह प्रसन्न तो रहती है?

मेरा हाथ पोंछनेका रूमाल वहीं रह गया है। प्रभावती[2] जानती होगी। ढूंढना। मिल जाय तो संभाल कर रख लेना।

---

१ अुत्तर प्रदेशके कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री शीतलासहायकी पत्नी।

२ श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी। अुस समय श्री जयप्रकाश नारायण विदेशमें थे। हम दोनों बहनें आश्रममें अेक ही कमरेमें साथ रहती थीं।

स्वास्थ्य बिगाड़नी तो ठीक नहीं होगा।

सूरजबहन[1] के बारेमें मैंने तो तुरन्त ही तार भेजा था परन्तु भगवान जाने वह मिला क्यों नहीं।

बापूके आशीर्वाद

## ११

वर्धा
१-१२-२८

चि कुसुम

तू मूर्खा है नहीं क्यूं न? तुझे दुःख जिसमें तू दुःखी किसलिये हुअी? जिस तरह दुःख मानने लगेगी तो मैं कैसे दुःख पूछ सकूंगा?

मैं तो जो मान्यता मैंने तेरे बारेमें बना ली है वैसी ही तुझे बनी हुअी देखना चाहता हूं। अधिक लिखनेका आज समय नहीं है।

मनु (गांधीजीकी पोती) को तू अच्छी तरह संभाल रखती अिस बारेमें मेरे मनमें तो कोअी शंका है ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

## १२

वर्धा
५-१२-२८
बुधवार

चि कुसुम

तेरा पत्र मिला। वहांके[2] ब्यौरेवार समाचारोंकी मैं तुमसे आशा रखता हूं। रसोअीघरके समयका पालन होता है? शोर कम हुआ है?

गंगाबहन[3]को सब मदद देते हैं?

---

१ श्री कृष्णदास चीताळियाके मारफत आश्रम-जीवनका अनुभव लेने आयी हुअी अेक बहन।

२ साबरमती आश्रमके।

३ वैद्य। आजकल बोचासण वल्लभ-विद्यालयमें रहती हैं। साबरमती आश्रममें पू. बापूजीने संयुक्त रसोअीघरकी जो योजना की थी अुसकी व्यवस्था वही गंगाबहनके पास थी।

कोअी बीमार है?

बल्लीएं कैसे रहता है? पपाका क्या हाल है?

तू मेरे बारेमें खबर चाहती है। मुझे कुछ समय मिले तब तो लिखूं। बात यह है कि यहां तो किसीके साथ बात करने तकका समय नहीं मिलता। प्यारेलालको अच्छी तरह काममें लगा दिया है, जिसलिये वह भी नहीं दे सकता। जरा धीरज रखना।

प्रभावती अब जल्दी पटनी होगी जिसलिये पत्र नहीं लिख रहा हूं। विद्यावती यहां होती तो पत्र लिखता। हो तो कहना — मुझे बीमार हरगिज न पड़ना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

## १२

वर्धा,
६-१२-२८
गुरुवार

चि० कुसुम

ऐसा क्यों? फिर बुखार? जिसमें मानसिक व्यथाका स्थान जरूर है। रणछोड़लालभाईके पास सिंकोनाकी गोलियां भी रख आया हूं। अगर बुरा मालूम न हो तो अुनका सेवन किया जाय।

---

१ खादीका काम सीखने आया हुआ भारत-संघका विद्यार्थी।

२ श्री शीतलासहायकी छोटी चौदह वर्षकी लड़की।

३ गांधीजीके मंत्री।

४ श्री प्रभावतीकी बहन राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूके पुत्र श्री मृत्युंजयबाबूकी पत्नी (अब स्वर्गीय)।

५ श्री रणछोड़लाल मोदी। अुस समयके आश्रमकी दूसरी ओर रहते थे। श्री केदारनाथजीके शिष्य।

६ पं० मोतीलालजी नेहरू सिंकोनाकी बनी हुआी गोलियां बांटते थे जो मलेरिया पर कुनैनके जैसा काम करती थीं। अुनका जिक्र है।

कुनैनके बजाय अुन्हें बहुत लोग लेते हैं। मोतीलालजी[1] अुनकी तारीफ कर रहे थे तब शायद तू मौजूद थी। अुन्होंने ही ये गोलियां भेजी हैं। समझ करके प्रयोग करना। नहीं तो मैं मानता हूं कि थोड़े दिन कुनैन लेना ही चाहिये। साथ साथ कटिस्नान करे तो अुसका बुरा असर नष्ट नहीं तो हलका जरूर हो जायगा।

मेरी दूसरी सलाह तुझे यह है कि अच्छी होने लगे तो कमसे कम दस दिन तो लगातार दूध और फलों पर रहना। फलों पर जो खर्च आये वह करना। अैसी हालतमें फलखर्च अपराध माना जायगा। यह तो तू जानती ही है कि पहले बुखारमें भी फलोंने तेरी मदद की थी। मैं मान लेता हूं कि अिसका असर तो होगा ही।

बुखारमें और कमजोरी रहे तब तक शारीरिक परिश्रमका आग्रह हरगिज न रखना।

बापूके आशीर्वाद

## १४

वर्धा,
८-१२-२८
शनिवार

चि॰ कुसुम

तू अच्छी तो हो ही नहीं सकती — यह कैसे? मेरे ही पास आनेकी अिच्छा होती हो और अुसमें अच्छी हो जानेकी आशा हो तो आ जाना। भाअी छगनलाल (जोशी) को अिस बारेमें लिख दिया है। परन्तु प्रभावती (जयप्रकाश नारायणकी पत्नी) का विचार करना। फिर भी शरीरकी संभालना अिस समय तेरा प्रथम कर्तव्य है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पं॰ मोतीलाल नेहरू।

## १५

वर्धा
९-१२-२८
रविवार

चि कुसुम

तेरा पत्र मिल गया। तेरा अनुमान ठीक तरहसे सही है। अभी तो यह कहा जा सकता है कि वहांसे यहां ज्यादा काममें लगा हुआ हूं। सबेरे जल्दी नहीं उठता। रातको नौसे पहले सो जाता हूं। परन्तु वहां कुछ अवकाश अनुभव करता था कुछ चलता-फिरता था। यहां तो सिर झुकाये लिखना या लिखवाना ही रहता है। तब मुश्किलसे काम पूरा होता है। परन्तु कामको मूठके बाहर नहीं होने देता। मुझे वह चिन्तामें नहीं डाल सकता। जितना होता है कर डालता हूं। दो बार घूमने तो नियमित जाता ही हूं। इस नियमका मुझसे बहुत ही अच्छी तरह पालन होता है।

बापूके आशीर्वाद

## १६

वर्धा,
१०-१२-२८
सोमवार

चि कुसुम

तेरा पत्र मिला। तू क्विनीन रोज लेती है[1] यह ठीक है। परिस्नामका क्या हुआ? उसकी बड़ी जरूरत है। यह क्विनीनके दोषोंका अवश्य निवारण करेगा।

कान्तिसे सेवा भी जा सकती है। जो रोज सेवा देनेको तैयार है वह जरूर सेवा ले सकता है। आज तो इतना ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१ गांधीजीके पौत्र। हरिलाल गांधीके बड़े लड़के।

## १७

वर्धा
११-१२-२८
मंगलवार

चि कुसुम

तेरा पत्र आया। प्रभावती (जयप्रकाश नारायणकी पत्नी) का भी। यह दोनोंके लिये है ऐसा समझना। ज्यादा समय नहीं रहा और मेरे पास काम बहुत पड़ा है। तूने संतरे लेना बन्द करके अच्छा नहीं किया। अेक सप्ताह भी ले तो अच्छा रहेगा। तेरे शरीरके लिये मुझको जरूरत समझता हूं। जिसमें तो शक ही नहीं कि संतरे तुझे अनुकूल हो जाते हैं। पपीता संतरेकी गरज पूरी नहीं कर सकता। नींबू और शहद किसी हद तक पूरी करता है परन्तु किसी हद तक ही। यह मैं यहां अपने अनुभव परसे देख पाया हूं।

बापूके आशीर्वाद

## १८

बुधवार

चि कुसुम

तेरा और प्रभावतीका पत्र मिला। जो गुरुजन करते हों सो कर। परन्तु अच्छी हो जा तो मुझे सन्तोष हो। आज अधिक लिखनेके लिये समय ही नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

## १९

वर्धा
१५-१२-२८

चि कुसुम (देसाई)

तेरा पत्र मिला। तू बिलकुल अच्छी हो गयी यह जान कर मैं निश्चिन्त हुआ। फिर बीमार न पड़ना।

मेरी गाड़ी तो ठीक चल रही है। कामका बोझ तो है ही परन्तु वह मुझे खटकता नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सोमवारसे लोगोंकी भीड़ यहां आनेवाली है। आजकल भोजनालय[1]में कितने लोग आते हैं?

## २०

वर्धा

चि. कुसुम

आज अधिक नहीं लिखा जा सकेगा। तन्दुरस्ती ठीक हो गयी है तो मुझे ठीक ही रखना। के बारेमें अभी तक कोई पत्र नहीं आया पर देखूंगा। वह यहां रहने आये और सीधी तरह रहे तो मुझे आपत्ति नहीं। असली बात तो तू जाने।

बापूके आशीर्वाद

## २१

वर्धा
१७-१२-२८
सोमवार

चि. कुसुम

तेरे दोनों पत्र मिल गये। तूने माफी तो ली ही। जिसे मैं मूर्खता मानूं उसकी मूर्खता माफ तो होगी ही। परन्तु मूर्खता बतानी तो चाहिये ही। माया नहीं आती यों कहकर निकल जानेका नाम मूर्खता नहीं परन्तु जिसे लोग लज्जाकी या चालाकी कहते हैं।

फिर बुखार आनेके समाचार आज मिले हैं। बूतेसे अधिक काम करनेमें भी अहंकार होता है। मूर्खता तो स्पष्ट ही है। जिनके शरीर लोहे जैसे हैं वे ही बूतेसे ज्यादा काम करें। अर्थात् उनके लिये बूतेसे बाहर कुछ नहीं होता। यह तो वही कर सकते हैं जो केवल

१ साबरमती आश्रमके सम्मिलित भोजनालयमें।

शून्य बन गये हैं और अीश्वरकी गोदमें सिर रखकर रहते हैं। तुममें जितनी श्रद्धा आ जाय तू शून्य बन कर रह सके तब जीमें आये अुतना काम करना। अभी तो मर्यादा रख।

बापूके आशीर्वाद

## २२

वर्धा
१८-१२-२८
मंगलवार

चि॰ कुसुम

कॉफी छोड़नेकी क्या जरूरत? मेरे रहते हुअे छोड़े तो मैं सूचना दूंगा। मेरी अनुपस्थितिमें अैसे प्रयोग किसलिअे? फिर तुमसे प्रार्थना करूं न? दूध और फलों पर ही रह और शरीरको निरोगी बना। अुसके बाद जानेकी अनुमति मंगाना।

बापूके आशीर्वाद

## २३

वर्धा
१९-१२-२८
बुधवार

चि॰ कुसुम

अब मैं तुझे क्या कहूं? डॉक्टरने सब कुछ खानेकी जो सलाह दी है, वह मानने योग्य नहीं। दूध खूब पिये और फल खूब खाये तो रोग रहे ही नहीं। दूधमें थोड़ी कॉफी डाली लेनेमें कोअी हर्ज नहीं। मेहनत थोड़ी ही करनी चाहिये और पूरी लेनी चाहिये दस्त रोज जाना ही चाहिये। जितना हो जाय तो शरीर निरोगी हुअे बिना रह ही नहीं सकता यह मेरा दृढ़ विश्वास है। कुनीन लेनेसे न डरना। डॉक्टर कुनैनके दोष दूर करनेके लिअे कुछ देवे तो लेनेमें हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

२४

कलकत्ता
१-१२-२८

चि॰ कुसुम

तेरे पत्र नियमित मिलते रहते हैं। जिसके पहुँचने तक तो प्रभावती (जयप्रकाश नारायणजीकी पत्नी) आ गयी होगी।

तू सबकी सेवा कर रही है, जिससे मुझे शान्ति है। सरोजिनी देवी ([illegible] पत्नी) से कहना कि मुझे कोई खास बात लिखनी नहीं थी जिसलिये नहीं लिखा। अब तो चार पाँच दिनमें मिलेंगे ही। धारणा तो छह तारीखको वहाँ पहुँचनेकी है। अब डाक जा रही है जिसलिये अधिक नहीं लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

२५

कराची
१-२-'२९
रविवार

चि॰ कुसुम

स्त्री-विभागमें सफाई अधिक रहनी चाहिये। सब बहनें मिलकर आपसमें बटवारा कर लें। अन्दरके चौकमें बहुत पानी फैलता है, यह बन्द होना चाहिये। अब बाहर नहानेकी दो कोठरियाँ हो गयी हैं तो सब अधिकतर उन्हींमें जायें यह ठीक रहेगा। यशोदाबहन[1] जिस कोठरीमें रहती हैं उसमें भी सफाई आनी चाहिये। पत्रोंका बन्दोबस्त कर लेना। आखिरी दिनकी धमचौरी मुझे खटकती है! मुझे मैं समझ नहीं सका।

बापूके आशीर्वाद

१ पूर्वी पंजाब — अम्बालाके गांधी-कार्यकर्ता गुरुदयालजीकी पत्नी। पति-पत्नी दोनों आश्रम-जीवनके लिये यहाँ थोड़े समय रहने आये थे।

## २६

मिठी शुक्र,<br>१-२-२९

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला। अिस बार रोज पत्र लिख सकूं, अैसी स्थिति ही नहीं रही। तू परेशान होती है और दुःखी रहती है, अिसका कारण कुछ कुछ तो समझ सकता हूं। परन्तु यह कारण दूर करना चाहिये। बाह्य कारण हम हमेशा दूर तो नहीं कर सकते। लेकिन अुन पर हम काबू पा सकते हैं। यह काबू अुन्हें सहन करनेमें है। (यहां नहाने अुठा और नहाकर निकला तो रसिक[1]के मरनेका तार हाथमें पड़ा। फिर भी आया। आकर लिखने बैठा। दिल्लीके पत्र पूरे करके तेरा पत्र पूरा करनेको हाथमें लिया। अिस प्रकार घड़ीभरमें मानो अेक युग बीत गया।) अब मेरे कहनेका अर्थ बिना समझाये तू समझ गयी होगी। दुःखका निवारण अुसके सहन करनेमें ही है। फिर कोअी क्या कहता है, क्या करता है, कैसे रहता है, अिसका विचार भी क्यों करें? हमें स्वयं जो करना हो वह हम शान्ति और आनन्दसे करें। जितना करनेकी तुझमें शक्ति है। न हो तो पानेका महाप्रयत्न करना।

अपनी तबीयत संभाल कर काम करना। बाल-मन्दिरके बारेमें खूब गहरे जाकर जो करना अुचित हो वह करना। अुसका सुहावना-पन तो तेरे हाथमें ही है न। जो चीज तू ढूंढ़ने नहीं गयी वह चीज जब आ पड़ी है तो अुसे निभाना और सुशोभित करना चाहिये।

प्रत्येकके गुण ढूंढ़कर अुनका चिन्तन करना। दोष देखे तब सोचना कि दोष-रहित संसारमें अेक भी चीज नहीं होती। जड़ चेतन गुण-दोषमय नामक दोहा गाना और अुसका मनन करना।

अिससे अधिक अब आज नहीं लिखा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पूज्य गांधीजीका पौत्र। हरिलाल गांधीका छोटा लड़का। वह जामिया मिलिया दिल्लीमें था। वहीं अुसका देहान्त हो गया।

## २८

१८-२-२९

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला। मेरी मौजूदगीमें तू आने-जानेवाली मेरी सारी डाक पढ़ ही सकती है।[1] परन्तु मेरी गैरमौजूदगीमें जरा नाजुक बात है। परन्तु मैंने तुझे कोअी अुलाहना नहीं दिया। मैंने तो मर्यादा बताअी। मैं आशा रखता हूं कि जब तक तेरे और      बहनके बीच अन्तराय है तब तक जिससे गलतफहमी पैदा हो अैसी कोअी भी बात तू नहीं करेगी। अैसा क्या काम हो सकता है, यह देखनेके लिअे सूक्ष्म अहिंसा और अुदारताकी आवश्यकता है। लेकिन बात यह है कि जिस तरह      बहनको तेरी तरफसे बुरा लग जाता है वैसे ही तुझे भी लग जाता है। कुछ भी हो तो भी दुःख न माननेकी आदत डालनी ही चाहिये। जिसे अुलाहना न समझ कर अनुभवीकी सलाह समझना। मैं जानता हूं कि तू अपनी बुद्धिके अनुसार बढ़ रही है। जिससे मुझे सन्तोष है। परन्तु मुझे तो शुद्धिकी गति बढ़ी हुअी देखनी है।

बापूके आशीर्वाद

## २९

मौनवार

चि॰ कुसुम

तू अब निश्चिन्त हो गअी है। गंगाबहनके साथ मन मिल गया है, यह तो मुझे बहुत अच्छा लगा। तुम तीनों[2] अेक हो जाओ तो

---

१ पू॰ गांधीजी आश्रमवासियोंके लिअे आयी डाक जिकट्ठी भिजवाते थे। और जिस पत्र पर निजी नहीं लिखा होता वह देख ली जाती थी और अुसकी सूचनाके अनुसार सम्बन्धित व्यक्तियोंको पहुंचा दी जाती थी। अेक बहनको यह अच्छा नहीं लगा। जिस बारेमें पू॰ गांधीजीसे पूछा गया। अुसीके जवाबमें अुपरोक्त पत्र है।

२ गंगाबहन वैद्य, वसुमतीबहन और मैं।

और बहनें भी मुझमें समा जायेंगी और स्त्री-विभाग जो दूसरा-सा मालूम होता था वह घुलकर अेक हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

## १०

कलकत्ता
४–३–२९
सोमवार

चि. कुसुम

तेरे पत्रकी आज प्रतीक्षा कर रहा हूं। वह तो अभी ही लिख डालना चाहिये।

तीसरे दर्जेका सफर मेरे लिये तो आसान हो गया है। दिल्लीमें सारा डिब्बा मुझे सौंप दिया गया था।

तू भी घरकर सगे-सम्बन्धियोंमें घूमना, तबीयतको संभालना और जल्दी लौटना। परन्तु जितना समय चाहिये भुगता लेना।

आश्रममें बहनोंको पत्र लिखती रहना।

मुझे भय है कि यह बात मैं अभी तक पूरी नहीं समझा सका हूं कि जो मनुष्य अपने-आप बंधता है वही बन्धन-मुक्त होता है। परन्तु यह बात अब समझ लेनी है। बिना पतवारकी नाव स्वतंत्र नहीं है परन्तु जिधर-उधर भटकती है और अन्तमें किसी चट्टानसे टकरा कर टूट जाती है। जिस नाव पर समुद्रकी सारी लहरें असर करती हैं। जिसी तरह जो मनुष्य अपनी मर्यादा बहनेसे बचा लेता है वह दुनियाके तूफानी समुद्रमें जूझता है और शान्त रह सकता है। जिसको पूरी तरह समझ लेनेके बाद तुझे भी ठीक लगे तो मानना। मैं अपनेसे अधिक स्वतंत्र जिस जगतमें किसीको नहीं देखता। परन्तु मैं अपनी स्वतंत्रता आश्रमको दान कर अर्थात् नियम बनाकर और मुझसे पालन करते भोगता हूं। जिस कारणसे मैं देखता हूं कि तुम्हें अनेकोंके साथ बंधना पड़ता है। समाजमें रहनेवाले प्राणीके लिये यह आवश्यक है।

महादेवके समाचार सुबैया[1] या प्यारेलाल लिखें तो भुनसे सन्तोष करना।

अभी तक तो मैं मानता हूँ कि आश्रममें २८ तारीखको पहुँचूँगा। तबीयत अच्छी है। कामके भारका तो कहना ही क्या?

बापूके आशीर्वाद

## १३

बम्बई
५-४-२९
शुक्रवार

चि. कुसुम

शारदाके[2] बारेमें दूसरे पत्रोंसे जान लेना। जिस काममें पूरी मदद करना। सुलोचनाबहनकी सेवा करना। शान्ति तो रखोगी ही ऐसा मानता हूँ। अबकी बारके सफरमें तो ले ही जाऊँगा। राधाकी[3] तबीयत खूब नाजुक है जिसलिये भुसका भार भुठाया जाय तो भुठा लेना।

बापूके आशीर्वाद

## १४

मंगलवार

चि. कुसुम

मैं मान लेता हूँ कि छगनलाल (जोशी)को तू खूब मदद देती होगी। भीतर जितना सेवाभाव हो वह सब अुँडेलनेका अब समय है। आत्मविश्वास न खोना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मद्रासी भाओ। अुस समय पू. गांधीजीके स्टाफमें थे। वे शॉर्टहैंड टाअिपिस्टका काम करते थे।

२ शारदाबहन कोटक। आश्रममें रहनेवाली बहन।

३ मगनलाल गांधीकी पुत्री।

ऐसी स्थितिमें पड़ जायें तब मुझसे भविष्यके लिये पाठ ले लेना चाहिये। जितना करें तो बस है।

अब गुजरेठसे दौड़कर आनेकी जरूरत नहीं। वहां गयी है तो वहांका काम निपटा कर ही आना। जानेसे पहले निश्चय कर लेना कि या तो आश्रममें जिम्मेदारीका काम लिया न जाय और लिया जाय तो दूसरा संभाल न ले तब तक मुझे छोड़ा न जाय। मेरी गाड़ी ठीक चलती है।

बापूके आशीर्वाद

२८

आश्रमके प्रवाससे
२७–४–२९
गुरुवार

चि. कुसुम

जिस समय रातके २–२ हुये हैं। आज १२–४५ पर उठा हूं। कामके पत्र लिखाने थे और मच्छर तंग कर रहे थे। थकावट जितनी नहीं थी इसलिये आज उठा। तेरा पत्र कल ही मिला।

गंगाबहन अच्छी हो जायें तब तक धारिसे वहां रहना। जब हम मिलें तब मेरे पत्रके बारेमें अधिक पूछना हो तो पूछ लेना।

मैं देख रहा हूं कि तू अपने मनमें उलझेवाले विचारोंको खूब दबाती है। मुझे लिखके लिखती नहीं कहती नहीं। यदि तू मुझसे पिता और मित्रका पार्ट अदा कराना चाहती हो तो तेरा यह व्यवहार ठीक नहीं।

पेंसिलसे लिखनेकी आदत छोड़ दे तो अच्छा[1]। मुझे यह आदत थी। मैंने देखा कि सामनेवालेको पेंसिलसे लिखा हुआ पढ़नेमें मुश्किल होती है। पेंसिलके अक्षर डाकसे पहुंचते पहुंचते धुंधले हो जाते हैं। तेरे अक्षर साफ हैं इसलिये यह सही है कि पढ़नेवालेको कम असुविधा होगी परन्तु असुविधा तो होगी ही।

---

१ मेरा अेक पत्र पेंसिलसे लिखा हुआ गया तब तक पू. बापूजी कुछ न बोले। दूसरा गया कि आदत बता कर मुझे सावधान किया।

वहाँका हाल तो प्रभावती लिखती ही होगी। अुद्योग-मन्दिरमें आजकल जो कुछ चल रहा है[1] अुसमें तू वहाँ होती तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अुसके पहुँचनेके बाद तो तेरा धर्म बड़ाबहनके पास ही रहनेका है अिस विषयमें मुझे शंका नहीं है। तू अुनके स्वास्थ्यके बारेमें तो कुछ लिखती ही नहीं।

प्रभावती तो तुझे अनेक पत्र लिखती ही होगी अिसलिये अिस हमेशा याद रहनेवाली यात्राका सब हाल तू जानती होगी[2]। मेरी तंदुरुस्तीमें कोअी खराबी नहीं है यह अभी तक तो कहा जा सकता है। आगेकी भगवान जाने। २–१ बजे हैं।

बापूके आशीर्वाद

३९

कोकोनाडा
१–५–२९

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र आया है। अब बड़ाबहन स्वस्थ हो गयी होंगी। अभी तक तो सफरका कोअी बुरा असर नहीं दिखा। और अब तो बहुत गयी और थोड़ी रही है। और समाचार प्रभावतीके पत्रसे जान लेना।

बापूके आशीर्वाद

१ साबरमतीके सत्याग्रहाश्रमको अुद्योग-मन्दिरमें बदला गया था। अुसके नियमोंमें जो फेरबदल हो रहा था तथा जो सैद्धान्तिक चर्चायें चल रही थीं निर्णय आदि लिये जा रहे थे अुनका अुल्लेख है।

आन्ध्रमें बहुत ही भागदौड़का कार्यक्रम रखा गया था। अर्थात् रेलवे लाअिनसे दूर दूरके गाँवोंमें भी।

४०

आंध्रके प्रवाससे
४-५-२९

चि कुसुम

आजकी डाकके सब पत्र सफरसे रातको ८-१ बजे आकर लिख रहा हूं क्योंकि सवेरे फिर तैयार होना है। और पत्र यहां न लिखूं तो फिर जा नहीं सकते।

तेरा पत्र मिला है। सब कुछ लिखनेमें जरा भी संकोच न रखना।

तू गयी जिसका व्यथा वक्रामबहनको मिला जिसमें तो शक ही नहीं। मैं मानता हूं कि तू वहांका काम अधूरा छोड़कर नहीं आयी होगी। जिस समय और कुछ नहीं लिखा जा सकता।

सुलोचनाबहनने लिखा है कुसुमबहन भी नहीं है जिसलिये जी नहीं लगता।

बापूके आशीर्वाद

४१

आंध्रके प्रवाससे
मौनवार

चि कुसुम

तू परेशान बनकर दुखी। हालांकि मुझसे तूने कहा तो यह है कि जैसा मुझे अच्छा लगे वैसा मैं करूं। प्रभावती थक कर जिस समय पास ही ओर निद्रामें पड़ी है। सारी रात गाड़ीमें चोरपूक रहा। यों कहा जा सकता है कि तीसरे दर्जेकी भीड़ चोबीसी महात्माको भी सहनी पड़ती है। प्रभावती अपने शरीरकी रक्षा कर सकेगी या नहीं यह देखना है।

कुछ भी हो दूसरी यात्रामें तुझे ले जाऊंगा। तू सफरका बोझ कैसा सहन कर सकती है यह देखना पड़ेगा।

सुलोचनाबहन आनन्दमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

## ४२

(कराडीके समय)
११-४-३०

चि० कुसुम

तेरा पत्र मिला है। मिलना चाहिये था कल। परन्तु प्यारेलाल भूल गये। आज आधा पत्र पूरा कर रहा था तब आया।

आश्रममें जानेका निश्चय हुआ यह बहुत ठीक हुआ है।

अब दूधीबहन[1]को समझाना। वे अलग रहती हैं जिसके बजाय आश्रममें रहें तो उनकी संभाल रखी जा सकती है। [2] को काममें लगा देना। मुझे जोर देकर कहनेमें संकोच न रखना। पान्तुके दांत हरिभाईजी[3]को दिखा देना। सब बीमारोंकी खबर देना। डायरी लिखना न भूलना। गीताका अध्ययन अच्छी तरह करना। गुजराती [illegible] साफ कर डालना। दिनभरका कार्यक्रम देना। मुझे कब पकड़ा जायगा जिसका कोई पता नहीं चलता। मिजाजमें आये तब पकड़े[4]। तू तो नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। अभी रोज दिन तो यहाँसे मोटर जायेगी। फिरसे हरिभाईजीके बारेमें लिखनेका प्रयत्न करना।[5] हारना नहीं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री वालजीभाई देसाईकी पत्नी।
२ चरखा-संघका विद्यार्थी।
३ अहमदाबादके डॉक्टर श्री ह म देसाई।
४ अहमदाबादसे।
५ मेरे पतिका जीवन-वृत्तान्त।

## ४३

दांडीकूच
१४-३-३

चि० कुसुम

कृष्णाकुमारीकी आंखें अच्छी हों तो मुझे हरिभाऊजीको लिखाना। चन्द्रकान्तासे कहना कि मुझसे मैं बड़ी आशा रखता हूं। शान्तुके साथ हरिभाऊजीको लिखा देना और जो लिखते हैं मुझे सुनाई देनेको कहना। बीचमें और दूसरे कोई भी बीमार हों तो उनके स्वास्थ्यके समाचार भेजना।

तेरी दिनचर्या भेजना। रहनेकी अच्छी ही कोठरी है? वहां कैसा लगता है?

बापूके आशीर्वाद

## ४४

आणंद
मौनवार,
(दांडीकूच)

चि० कुसुम

तेरा पत्र मिला। मकानके बारेमें तूने जो लिखा वह सही है। परन्तु धर्म तो आश्रममें ही जानेका था। इसलिये अभी तो ठीक ही हुआ है। जो श्रेय है उसीको प्रेय बना डालना चाहिये। अपने शरीरकी रक्षा करते हुवे जितना काम किया जा सकता हो उतना ही करना। मुझे तो लिखा ही करना।

संगीत तो छूटा ही नहीं। समय मिलने पर सब साफ कर डालना। मेरी चिंता न करना। मैंने तुझे दुःख तो दिया ही है। पर मुझे उसका खेद नहीं है। मैं न दूं तो और कौन दे?

बापूके आशीर्वाद

---

१ गुजरातसे आयी हुई बहनें।

२ पूज्य गांधीजीके कुटुम्बी। प्यारा बापू (गुजराती) पुस्तकके सम्पादक नवीन गांधीके भाभी।

४५

२१-३-३०<br>(डांडीकूच)

चि॰ कुसुम

जो पत्र नहीं लिखे वह मंत्रिणी कैसी? महादेव[1]से इस समय आशा नहीं रखता। उन्हें समय नहीं मिलता। वे मंत्री होते हुये भी आजकल मंत्रीका काम नहीं करते परन्तु उससे अधिक करते हैं। तूने तो मंत्रिणीकी हद पार नहीं की। बीमारोंके समाचारोंकी आशा रखता हूँ। वहाँके[2] कार्योंका हाल भी जानना चाहता हूँ। और जो तुझे सूझे वह। बाकी क्या हालचाल है? तेरी तबीयत कैसी रहती है? तू बराबर पढ़ती है? पीसती है? कातती है? अपनी डायरी लिखती है? जीवन-वृत्तान्त लिख रही है?

बापूके आशीर्वाद

४६

वामोल,<br>२३-३-३०<br>प्रार्थनासे पहले<br>(डांडीकूच)

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला।

नारणदास[4] व गंगाबहन[5]की अनुमति मिले तो अेक दिन बिता जाना। भड़ौच गुरुवारको पहुँचना है यह तो जानती है न? वह तुझे

---

१ श्री महादेव देसाई पू॰ गांधीजीके मंत्री।

२ साबरमती आश्रमके।

३ मेरे पतिका पत्र-साहित्य छपवाना था। उसमें पू॰ गांधीजीने प्रस्तावना लिखना मंजूर किया था। गांधीजीका आग्रह था कि मैं उसमें अपने पतिका जीवन-वृत्तान्त लिखूँ।

४ श्री नारणदास गांधी। उस समय आश्रमके मंत्री।

५ श्री गंगाबहन वैद्य।

सोमवारको मिलना चाहिये। आज मिल सकता था परन्तु पत्र लिखनेका समय ही नहीं था।

तीन बजे नहीं अुठ सकती जिसका दुःख मानना तेरा पागलपन है। शरीर काम न करे तो जिसमें तू क्या करे? बाकी सब अीश्वरके अधीन है। तू असावधान न रहे, जितना काफी है। प्रयत्नशील तो है ही। अधिक लिखनेका समय नहीं।

दूधीबहनको पत्र तो लिखा ही है।

बापूके आशीर्वाद

## ४७

दांडीकूचके समय
(बहुत करके कराड़ी—सूरतके पासकी)
१४–४–१

चि. कुसुम

मद्यपान-निषेध और विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके बारेमें मैंने लिखा है[1] अुसमें कुछ भूल पड़ता है? तू अुसमें प्रमुख भाग लेनेकी हिम्मत रखती है क्या?

तेरे पत्र मिले हैं।

वहां किस काममें व्यस्त है?

मेरे पकड़े जानेकी पक्की खबर है, ऐसा मानकर कल मुझे सारी रात जगाया था। और मैं तो अभी तक मौज कर रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

1 दांडीकूचके समय नवसारीके पासके देवलपुर गांवमें पू. गांधीजीने बहनोंकी बड़ी सभा की थी और अुसमें विदेशी वस्त्र बहिष्कार तथा मद्यपान-निषेधका काम मुख्यतः बहनें हाथमें लें, असे प्रस्ताव पास हुअे थे। जिस विषयमें अुन्होंने ता. २०–४–१ के नवजीवनमें लिखा था अुसीका अुल्लेख है।

## ४८

२–५–३

चि॰ कुसुम

अपने पिछले अधूरे पत्रमें जो पत्र लिखनेका तूने लिखा था वह अभी तक नहीं आया।

अिसके साथ दो पत्र तेरे नामके हैं अुन्हें रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

## ४९

यरवडा मंदिर

चि॰ कुसुम (बड़ी)

बड़ी तो छोटी या बड़ी? आश्रम छोड़ा[1] परन्तु सेवाधर्म न छोड़ना। मुझे पत्र लिखना। अीश्वर तेरा कल्याण करे।

बापूके आशीर्वाद

## ५०

यरवडा मंदिर,
१४–७–३

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र बहुत दिनों बाद मिला। तू ठीक स्थान पर पहुंची है। अन्तमें तो तुझे आश्रम पहुंचना ही है। अपना शरीर न बिगाड़ना।

---

१ मेरे पतिके स्वर्गवासके बाद साबरमती आश्रममें मेरा रहना हुआ। अुसका कारण आश्रम-जीवनकी अपेक्षा पू॰ गांधीजीके प्रति मेरा भक्ति-आकर्षण अधिक था। पू॰ गांधीजीने दांडीकूचके समय महाप्रस्थान किया अुसके थोड़े समय बाद मैं आश्रमसे बाहर आ गयी। अुसीका यहां अुल्लेख है।

२ वेडछी सेवाश्रममें रहकर मैं मद्यपान-निषेध तथा विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके काममें जुटी, अिसका अुल्लेख है।

मुझे लिखती रहना। जीवन चरखा और तकली पर पूरा काबू पाये बिना सिलाओी पर न जाना। यह आसान है। अनिवार्य भी नहीं। कातनेकी क्रिया सम्पूर्णताको पहुँचे तो बहुत मानूँगा। पुराणी[1] अभी बाहर है।

बापूके आशीर्वाद

## ५१

यरवडा मंदिर,
१–८–३

चि० कुसुम (देसाओी)

तेरा पत्र मिला। किसीके शुभ प्रयत्न आज तक व्यर्थ नहीं गये। मिनुलालके[2] बारेमें निश्चित समाचार तो पहले तू ही दे रही है। अच्छा हुआ।

सबके साथ पत्र-व्यवहार तू अच्छी तरह कायम रख रही है। सुशीला[3] (पंजाबिन) को पत्र लिखती है? यदि अुसका पता जानती हो तो अुसे लिखना कि मुझे लिखे। वह क्या कर रही है?

सबको यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री छोटूभाई पुराणी (अब स्वर्गीय)।

२ श्री मिनुलाल मालिक। अुस समय विदेशी वस्त्र-बहिष्कार समितिमें काम कर रहे थे। अिनीका [illegible] है।

३ डॉ० सुशीला नय्यर। प्यारेलालजीकी बहन। दिल्ली राज्यकी भूतपूर्व आरोग्य-मंत्री।

## ५२

यरवडा मंदिर
२२-८-३२

चि० कुसुम (देसाई)

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रका उत्तर मैं जल्दी नहीं देता। सुशीलासे जो सीखा था उसे सीख लेना। परन्तु वाचनका समय रहता है? डायरी लिखती है? प्रार्थना जारी रखी है? मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

वहां कितनी बहनें काम करती हैं? अपङ्गघरकी क्या खबर है?

बापूके आशीर्वाद

## ५३

यरवडा मंदिर
१२-९-३२

चि० कुसुम (देसाई)

तेरा पत्र मिला। मैं राह देख रहा था प्यारेलालके समाचार मिलनेकी आशासे। प्यारेलाल यहां है यह खबर भी तेरा तार अनायास जेलरके पास देखा तब लगी। फिर जमनादास (गांधी) के पत्रमें उसकी खराब तबीयतके समाचार थे। यहां तो मुझे कहा गया है कि वह आनन्दमें है। अब तेरे पत्रसे पता चलेगा।

नियत कर्मके बारेमें तू आलस्य न करना। श्रद्धा रखना। श्रद्धाका काम तो वहीं होगा न जहां बुद्धि काम न दे? जो आलस्यके कारण या और किसी कारणसे न हो उसके बारेमें मुझे लिखते हुअे संकोच न करना। मुझे लिखनेसे भी तू सुरक्षित रहेगी क्योंकि मुझे लिखना पड़ेगा यह बात ही तुझे नियमित बनानेमें मददगार होगी।

बाके विषयमें यहांसे मैं क्या कर सकता हूं? तू ही मोटुबहनके सामने शिकायत कर। बा स्वतंत्र रूपमें तो कोअी बात हरगिज नहीं

---

१ नडियादमें।

कर सकती। मीठूबहनकी सरदारीमें या वहां गयी है जिसलिये असके अधीन बाको रहना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

## ५४

यरवडा मंदिर,
२१-९-१

चि. कुसुम (देसाआी)

तेरा पत्र मिला है। तू स्वयं बीमार पड़ी है असा सुनता हूं। यह क्यों? मच्छर हों तो बेशर्म होकर भी मच्छरदानी काममें ली जाय। असका प्रबन्ध नहीं हो सके तो आयलेट चुपड़ना। प्यारेलालको मेरे साथ रहनेकी मांग यों नहीं की जा सकती। काकाकी मांग भी मैंने नहीं की थी। अन्होंने भेज दिया। परन्तु प्यारेलालसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हूं। असे दस्त कम गये हैं यह सुनते ही मिलनेकी मांग की है। अब असे आराम है। तुझे जानना चाहिये कि यहां रहनेवाले कैदी कौन है जिसका मुझे पता नहीं चलता। मैं पिंजड़ेमें हूं यही समझ। तुझे पता लगते ही तुरन्त मुझको लिखना चाहिये था।

बापूके आशीर्वाद

## ५५

यरवडा मंदिर,
२१-९-३

चि. कुसुम (देसाआी)

तेरा पत्र मिला। प्यारेलालके बारेमें पिछले पत्रमें लिखा है। अभी तो भेंट नहीं हुआी परन्तु अब असके बारेमें समाचार मिल सकते हैं। मिलना तो होगा ही। साथ रहनेकी बात दैवके अधीन है। जब मैं बाहर निकलूंगा तब तो मिलेगा ही और मेरे पास रहेगा। परन्तु भविष्यको कौन जानता है?

का  सा  नवम्बरके मध्यमें छूटेंगे। जितनेमें तो प्यारेलालकी मियाद भी पूरी होनेको आ जायगी न? प्या  के लिये मध्यमें गीता और रामायण आश्वासनदाता सिद्ध हुवी हैं। अिसलिये मैं समझता हूं कि मैं चिन्तासे मुक्त हो गया। मुझे वे क्यों नहीं पकड़ती थीं यह मैं समझ नहीं सकता था।

तू स्वयं स्वीकार करती है कि मुझे लिखकर ही तू सुरक्षित रह सकती है। तो मुझे पूरा ब्यौरा लिखा करना।

मैंने पुराने चप्पल नहीं मांगे। नये वे भुलें तू मुझ नयी सीवती है। परन्तु अभी तो काम चलता है।

बापूके आशीर्वाद

५६

यरवडा मंदिर,
७-१०-३

चि. कुसुम (देसाई)

पिछले सप्ताह प्यारेलालसे मिल सका। थोड़ा ही समय दिया था। शरीर मुझका दुबला तो हुआ ही है। परन्तु अब ठीक है। दूध वगैरा मिलता है। देखभाल होती है। अब अधिक मिल सकूंगा ऐसा खयाल है।

बापूके आशीर्वाद

५७

यरवडा मंदिर,
१७-१ -३

चि. कुसुम (देसाई)

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रकी राह देखूंगा। आजकल तो नियमित लिखती रहना। हारना नहीं। प्यारेलालसे फिर मिला था।

१ काकासाहब कालेलकर।

अभी और मिलनेवाला हूं। अब कोअी फिक्र नहीं है। सेवाश्रमके अस्पताल भी कम्बलें ले लिये जानेकी खबर अखबारोंमें है।

बापूके आशीर्वाद

## ५८

यरवडा मंदिर,
१-११-३

चि. कुसुम (देसाअी)

सुशीलाको लिखना कि मैं शनिवारको प्यारेलालसे मिला था। अब अुसका शरीर फिरसे ठीक हो गया है। अुसका वजन फिरसे पा लिया है। तीन सेर दूध और अेक सेर रोटी खाता है। मिलता हो तब साग भी खाता है।

तेरी अनियमितताके बारेमें तुझे क्या लिखूं?

बापूके आशीर्वाद

## ५९

यरवडा मंदिर,
१४-११-३

चि. कुसुम (बड़ी)

तुझे क्या कहूं? लिखने बैठी तब तो तू काफी खबर दे सकी। अब लिया हुआ निश्चय पालन करना। मेरे पास अपना रोना भी चाहे तो रो सकती है। हमें तो दुःखमें सुख मानना है। यही गीताका सार है, यों भी कहा जा सकता है। परन्तु मुझे मान नहीं देना है।

---

१ महीना।

२ मैंने हर सप्ताह पत्र लिखनेको कहा था और मैं लिख नहीं सकी थी। अिसके बारेमें।

चप्पल तो जेलमें मंगवाने पड़े हैं। कपड़े कुछ नहीं चाहिये। महादेवका कम्बल जिस्तेमाल करता हूं। जुसके लिये दाम लिया था यह तो है ही। खादी तो खूब आ गयी है। तेरा शरीर तो अब अच्छा है न? काकासाहब २८ तारीख तक छूटेंगे।

बापूके आशीर्वाद

६०

यरवडा मंदिर
२२-११-३

चि० कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। श्लोक हमारी प्रार्थनाका अंग है जिसलिये जुसका स्मरण करना चाहिये — श्रद्धा पैदा हो तो हम प्रयत्नसे जुसमें तल्लीन हो सकते हैं। न हो सकें तो जुससे हारना नहीं है। जो लोग गाते हैं वे सब तल्लीन नहीं होते। परन्तु श्रद्धासे गाते गाते किसी दिन तल्लीनता अपने-आप आ जाती है। क्योंकि अर्थमें भी रहस्य भरा है यह तो है ही। जुसका मनन करनेसे भी तल्लीनता पैदा होनेमें मदद मिलती है।

बापूके आशीर्वाद

६१

यरवडा मंदिर
२९-११-३

चि० कुसुम (देसाई)

मेरे हर सप्ताह लिखनेकी प्रतिज्ञा करने पर भी जिस हफ्ते पत्र नहीं आया। जिसे मैं गंभीर भूल मानता हूं। यह कहा जा सकता है कि कहा हुआ वचन मिथ्या करने जैसी दूसरी भयंकर बात नहीं होती। यह दुर्गुण जितनी साधारण हो गयी है कि हमें जुसकी भयंकरताका पता नहीं चलता। परन्तु यह है यह निश्चित जान और सावधान हो।

था। कुछ न लिखना हो तब छोटेलालकी तरह कोरे कागज पर हस्ताक्षर कर दिये जायें। परन्तु मा-बापके सामने बच्चोंको कुछ कहना ही न हो यह संभव नहीं।

बापूके आशीर्वाद

काकासाहबके बजाय २९ तारीखको प्यारेलाल आ गया।

१-१२-३०

## ६२

यरवडा मंदिर,
९-१२-३०

चि० कुसुम (देसाई)

तेरे पत्रके तीन पन्ने थे। तीसरा पन्ना किन लोगोंने ले लिया मालूम होता है। मेरे हाथमें नहीं आया। तुझे याद हो तो फिर लिखना। प्यारेलालकी तबीयत बहुत ही अच्छी हो गयी है। १२२ पौण्ड वजन है। तीन सेर दूध, डेढ़ सेर रोटी और साग वगैरा मिलता है।

आजकल तो हम दोनों चरखेके पीछे पागल हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

## ६३

यरवडा मंदिर,
११-१२-३

चि० कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। अपने स्वास्थ्यमें मैं कोई खराबी नहीं पाता। फेरबदलमें सुधार ही देखता हूँ। जरा भी चिन्ता न करना।

प्यारेलालका समय यों बँटा हुआ है

१३५ तार चरखे पर, १ तार तकली पर, जितनी चाहिये उतनी पूनियाँ बनाना — इन तीन कामोंमें अभी तो मुश्किलसे ही फुरसत रहती है। तकली सुबहके दो घंटे लेती है। मैं भी लगभग

नहीं करता हूं। तकलीके १  —परन्तु चरखाके २७५ तार—हाँ तो काम चल सकता है। दोनोंके मिलकर १७५ तार।

लड़कियोंके बारेमें तू लिखती है यह ठीक है। मुझे अधिक स्पष्टतासे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

## ६४

यरवडा मंदिर,
१९-१२-३

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। कृपालानीका शरीर तो अच्छा है न? कान्ति वगैरासे थोड़े दिनोंमें मिलूंगा। प्यारेलालकी संस्कृत-संधि और संस्कृत समास वगैराकी पुस्तकें तेरे पास या तेरी जानकारीमें हैं ऐसा प्यारेलाल कहता है। ये पुस्तकें भेज देना। गीताके ठीक अध्ययनके लिये मुझे जिनकी जरूरत पड़ती है। हम-दोनोंकी तबीयत अच्छी है। अभी तो ज्वार-बाजरेकी रोटियां मुझे सब पची हैं ऐसा माना जा सकता है।

स्वास्थ्य-सम्बन्धी ब्यौरेवार समाचार साप्ताहिक पत्रमें लिखता हूं इसलिये अलगसे नहीं लिखता।

प्यारेलालके पत्र त्रिवेदीके मारफत भेजे जायं।

बापूके आशीर्वाद

## ६५

यरवडा मंदिर,
२९-१२-३

चि॰ कुसुम (बड़ी)

शान्ता तेरे साथ थोड़ा समय बिताये तो बहुत अच्छा। शिक्षाके बारेमें क्या चाहती है यह पता चले तो कुछ लिखना सूझे। गुजरातमें

१ पूनाके श्री जयशंकर त्रिवेदी।
२ कुछ समय आश्रममें रहनेवाले श्री शंकरभाई पटेलकी पुत्री।

यरवडा मंदिर,
१९-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

पुस्तकोंके बारेमें लिख चुका हूं। मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता करना ही नहीं। अच्छा ही कहा जायगा। ताराकी अुमर क्या है? डायरी तो रखती ही होगी? डायरी सचाओीके[1] लिअे बड़ी चौकीदार है यह मेरा और बहुतोंका अनुभव है।

चंदूभाओीके[2] अस्पतालका अब क्या हाल है? मकानके दूसरे भागका अब क्या अुपयोग होता है? प्यारेलाल मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद



यरवडा मंदिर,
२५-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। अिस बार भी कोओी लिखनेकी बात नहीं मिलती — यह अनुभव तेरे सब पत्रोंका आरम्भ बन गया है। अिसे पढ़कर हंसूं या रोअूं? अिसका जवाब तू ही पूरा कर लेना।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता होने जैसी अब क्या बात रह गयी है? जरा भी गड़बड़ हुओी कि मैंने खबर दी। तुरन्त अुचित अिलाज किया और फिर जैसा था वैसा हो गया। शक्तिमें तो कोओी फर्क पड़ा ही नहीं। फिर क्या चिन्ता?

धान्या अब आ गयी होगी।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मेरे देवर पूर्वी अफ्रीकामें गुजर गये थे अुनकी पत्नी।

२ भडौंच सेवाश्रमवाले डॉ॰ चन्दूभाओी देसाओी जो गुजरातमें छोटे सरदार के नामसे प्रसिद्ध हैं।

६९

इलाहाबाद
१-२-३१

चि कुसुम

जेलके बाहर समय कितना रह सकता है यह तो तू समझती ही है। अिसलिअे अब पहलेकी गतिसे पत्र नहीं लिखे जा सकते। पंडितजी[1] आज चल बसे। अिसलिअे फिरसे मुझे कहां जाना है कहां रहना है यह अनिश्चित हो गया। मुझे पत्र लिखना हो तो अिलाहाबाद लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

७०

इलाहाबाद
-२-३१

चि कुसुम

महादेवका लिखा हुआ पत्र मिला होगा। तेरे क्षोभको समझता हूं। अुसके अन्दरका संकोच ही मुझे तो ठीक नहीं लगता। परन्तु अब तो किसी जगह तू मिलेगी तब समय होगा तो यह समझाअूंगा। अथवा समझानेकी भी क्या बात है?

तेरे बारेमें बांधी हुअी आशा मैं छोडूंगा नहीं।

[illegible] पत्र आया है। वह लिखती है कि थोड़े ही दिनोंमें तेरे पास पहुंचेगी।

मेरी तबीयत तो अच्छी ही है। अभी तो १५ तारीख तक रहना होगा। बादमें जो हो सो सही। [illegible] अगर अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पंडित मोतीलालजी नेहरूके स्वर्गवासका अुल्लेख है।

## ६७

यरवडा मंदिर,
१६-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

पुस्तकोंके बारेमें लिख चुका हूं। मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता करना ही नहीं। अच्छा ही कहा जायगा। तारा[1]की अुमर क्या है? डायरी तो रखती ही होगी? डायरी सच्चाअीके लिअे बड़ी चौकीदार है यह मेरा और बहुतोंका अनुभव है।

चंदूभाअी[2]के अस्पतालका अब क्या हाल है? मकानके दूसरे भागका अब क्या अुपयोग होता है? प्यारेलाल मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद

## ६८

यरवडा मंदिर,
२५-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। अिस बार भी कोअी लिखनेकी बात नहीं मिलती — यह लगभग तेरे सब पत्रोंका आरम्भ बन गया है। अिसे पढ़कर हंसू या रोअूं? अिसका जवाब तू ही पूरा कर लेना।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता होने जैसी अब क्या बात रह गअी है? जरा भी गड़बड़ हुअी कि मैंने खबर दी। तुरन्त अुचित अिलाज किया और फिर जैसा था वैसा हो गया। शक्तिमें तो कोअी फर्क पड़ा ही नहीं। फिर क्या चिन्ता?

कान्ता अब आ गअी होगी।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मेरे देवर पूर्वी अफ्रीकामें गुजर गये थे अुनकी पत्नी।

२ मढ़ीके सेवाश्रमवाले डॉ॰ चन्दूभाअी देसाअी जो गुजरातमें छोटे सरदार के नामसे प्रसिद्ध हैं।

## ६९

अलाहाबाद
६-२-३१

चि कुसुम

जेलके बाहर समय कितना रह सकता है यह तो तू समझती ही है। अिसलिये अब जेलकी तरहसे पत्र नहीं लिखे जा सकते। पंडितजी[1] आज चल बसे। अिसलिये फिरसे मुझे कहाँ जाना है, कहाँ रहना है यह अनिश्चित हो गया। मुझे पत्र लिखना हो तो अलाहाबाद लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

## ७०

अलाहाबाद
९-२-३१

चि कुसुम

यहाँसे सीधा लिखा हुआ पत्र मिला होगा। तेरे लोभको समझता हूँ। अुसके अन्दरका संकोच ही मुझे तो ठीक नहीं लगता। परन्तु अब तो किसी जगह तू मिलेगी तब समय होगा तो यह समझाअूंगा। अथवा समझानेकी भी क्या बात है?

तेरे बारेमें बाकी कुछ भी जानना मैं छोड़ूँगा नहीं।

माताका पत्र आया है। वह लिखती है कि थोड़े ही दिनोंमें तेरे पास पहुँचेगी।

मेरी तबीयत तो अच्छी ही है। अभी यहाँ १५ तारीख तक रहना होगा। बादमें जो हो सो सही। अंग्रेजी अखबार अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पंडित मोतीलालजी नेहरूके स्वर्गवासका सूचन है।

७१

बोरसद
८-५-३१

चि. कुसुम

तेरे दो पत्र मिले। जैसे तुझे स्वयं लिखकर संतोष नहीं हुआ वैसे मुझे भी नहीं हुआ। मैं समझा नहीं। परन्तु अब जिस विषयको ज्यादा नहीं, खोदूंगा। थोड़ा-बहुत समझा हूं उतनेसे सन्तोष कर लूंगा।

अपना चरखेका काम शिथिल न बनाना। मेरा कहना ठीक समझमें आया हो तो उस पर अमल करना। चरखेके द्वारा गरीब दीनवर्गोंके घरमें प्रवेश करना।

* * *

सोमवारको यहांसे चल देना है।

बापूके आशीर्वाद

७२

बोरसद
१८-५-३१
सुबहकी प्रार्थनासे पहले

चि. कुसुम

तेरा सन्देसा तो मैं समझा नहीं था परन्तु पत्र समझा और पढ़कर दुःखी हुआ। पत्रका न आना ही बताता था कि तू दूर भागती जा रही है। न भागने और भागनेका चुनाव तो तेरे ही हाथमें है। वैसे तो अच्छा। यहां तो अब तेरी चिट्ठी ही तब आ सकती है।

२१ तारीखको यहांसे रवाना होना है। दो दिनके लिये अमदावाद जाना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

## ७३

मौनवार

चि० कुसुम

तेरा पत्र मिला। तू दूर दूर ही रही इसलिये क्या करूं? मेरी तो स्पष्ट राय है कि तुझे कांग्रेसमें आनेका विचार छोड़कर अलग कार्यक्रम चिपटे रहना चाहिये। बहुतोंको मैंने किसी तरह रोक लिया है। तू जितना संयम न रख सके तो मुझे आश्चर्य और दुःख होगा। फिर भी करना अपने मनकी।

बापूके आशीर्वाद

## ७४

सूरत
२४-७-३१

चि० कुसुम

तेरे सब पत्र मिले। प्रत्येकमें यह बात थी कि तू जल्दीसे जल्दी निकलनेवाली है इसलिये मैंने पहुंच भी नहीं लिखी। यह आखिरी पत्र तेरी स्थितिकी अनिश्चितता बताता है इसलिये लिख रहा हूं। आज दो दिनमें बोरसद जाऊंगा। वहांसे अहमदाबाद जानेका इरादा है। फिर तो जो हो जाय सो सही।

विलायत[1] जाना बिलकुल अनिश्चित है। जब मिल सके तब मिलना। डाहीबहन[2]से पत्र लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ दूसरी गोलमेज परिषदके लिये।

२ श्री रावजीभाई नाथाभाई पटेलकी पत्नी।

## ७५

बोरसद
१—७—३१

चि. कुसुम

तेरा पत्र मिला। मैं कैसा बावला बन गया था। तेरे पिछले पत्रके जवाबमें ही वह कार्ड था परन्तु तूने जो मांगा था वह स्पष्टीकरण मैं न दे सका। अुन भाअीके[1] साथ क्या बात हुअी थी वह तो याद नहीं। परन्तु मेरे पत्र अुनके हाथमें आये हों और कुछ प्रकाशित करने योग्य हों तो भले ही करें अैसा मैंने कहा होगा। तेरी अिच्छा अुन्हें कुछ देनेकी हो और तू अुन्हें जानती हो तो देना। मैं कल सवेरे अहमदाबाद पहुंचूंगा। ३ तारीखको वहांसे बम्बअीके लिये रवाना होअूंगा। तुझे आना हो तो आ जाना। मैं स्वयं तो विद्यापीठमें रहूंगा। बम्बअी आना हो तो बम्बअी आ जाना। डाह्याभाअीसे कहना कि अुसका पत्र मिल गया। मुझे अपना दिया हुआ वचन पालन करना चाहिये बात साफ होने पर। विज्ञापनका कुछ भी डर नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

## ७६

अहमदाबाद
१८—८—३१

चि. कुसुम

तेरा कार्ड मिला। मुझे डॉक्टरकी रकम नहीं चाहिये। तेरी चाहिये।

---

१ अेक भाअी पू. बापूके पत्रों आदिका संग्रह करके पुस्तक-रूपमें छपवाना चाहते थे और अिसके लिये बापूजीने सम्मति दी है अैसा मुझे बताया था। अिसलिये अिस सम्बन्धमें मैंने बापूजीको पूछा था। अुसीके अुत्तरमें यह जवाब है।

महावीरसे मिल आना।
मेरी दृष्टिसे तुझे दवाकी जरूरत नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

## ७७

यरवडा मंदिर,
२४-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तुझे बम्बईमें देखा तो जरूर, मगर कुछ पूछ ही नहीं सका। अब अपना सारे महीनोंका हिसाब भेजना। तेरा स्वास्थ्य देखनेमें तो ठीक लगा।

बापूके आशीर्वाद

## ७८

यरवडा मंदिर
२१-२-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र बहुत प्रतीक्षा करानेके बाद आया। छोटूभाअीसे[1] कहना कि हम दोनों अुन्हें अक्सर याद करते हैं। प्यारेलालका कोअी

---

[1] अुस समय साबरमती आश्रममें रहते थे। अुनके पिता स्व॰ बहादुर गिरि नेपाल-स्थित सिक्किम के निवासी थे। सरकारी नौकरीमें अच्छे पद पर थे। पू॰ बापूजीके संपर्कमें आ जानेके कारण आश्रममें शरीक हो गये। जेलयात्रा की। वहां बहुत बीमार हो गये तो सरकारने छोड़ दिया। मृत्युके समय अुनकी ख्वाहिश थी कि अुनका कुटुम्ब साबरमती आश्रममें पू॰ बापूजीकी छायामें रहे। अिस प्रकार यह सारा परिवार वहां रहता था। भाअी महावीर अुस समय विद्यार्थी-अवस्थामें थे। आजकल बम्बईमें फिल्मलाअिनमें रहते हैं।

[2] पुरानी।

समाचार लिखते हैं? मंजुमामीकी तबीयत कैसी रहती है? डॉ॰ सुमन्त कहां हैं? कैसे रहते हैं? मैं ठीक हूं।

बापूके आशीर्वाद

## ७९

यरवडा मंदिर,
३-१-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा कार्ड और पत्र मिले। जैसे बच्चे लिखते हैं वैसे ही तू लिखती है कि कुछ लिखना नहीं है। यह ठीक नहीं है। तू अपने अनुभव लिखे तो भी पन्ने भर जायं। सोच कर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

## ८०

यरवडा मंदिर,
५-१-३२

चि॰ कुसुम

तू भी खूब है। अेक कार्ड और अेक पत्र भेजा पर अुसमें कुछ भी लिख नहीं सकी। जिन सब महीनोंमें तूने क्या पढ़ा क्या विचार किया कितना काता शरीर कैसा रहा कहां कहां घूमी? — वगैरा चाहे तो बहुत कुछ लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

## ८१

यरवडा मंदिर,
२१-३-३२

चि. कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। प्यारेलाल और गुलजारीलालकी तबीयत अच्छी रहती है। मिलनेकी इजाजत मिले तो दोनोंसे और दूसरोंसे मिल आना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है ऐसा कहा जा सकता है?

बापूके आशीर्वाद

## ८२

यरवडा मंदिर,
२४-३-३२

चि. कुसुम (बड़ी)

तूने स्पष्टीकरणमें ही कागज काफी भर दिया परन्तु यह तो अेक ही बार हो सकता है। तू जब चाहे आ सकती है।

हम तीनों मजेमें हैं।

जानकीबहन अब ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री गुलजारीलाल नन्दा। भारत-सरकारके योजना-मंत्री।

२ धूलिया जेल।

३ बापू, महादेव देसाई और वल्लभभाई। उस समय यरवडा जेलमें तीनों साथ थे।

४ स्व. श्री जमनालाल बजाजकी पत्नी।

## ८३

यरवडा मंदिर,
११-१-३२

चि. कुसुम (बड़ी)

तूने प्रतिज्ञा ली है तो जिन्दगी तो रहना ही। तुझे पच्चीसवाँ वर्ष लगा है तो क्या हुआ? तेरे सामने अभी बहुत लम्बी जिन्दगी पड़ी है। तुझसे तेरे बारेमें मेरे जैसोंने जो आशायें बांधी हों उन्हें सफल करना। प्यारेलालसे मिलने अवश्य जाना। अपनी तबीयत मैं इस बार अच्छी मानता हूं। अभी तक दूधके बिना वजन टिका हुआ है। और पिचकारीकी जरूरत नहीं पड़ती जिससे मुझे सन्तोष है। बायें हाथसे नहीं लिखा जा सकता जिसका मुझे दुःख नहीं। बायें हाथकी आदत पड़ जायगी। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

## ८४

यरवडा मंदिर,
८-४-३२

चि. कुसुम (बड़ी)

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। प्यारेलालका पत्र मिला था। मैंने जवाब भी दिया था। अब संस्कृत मुन्नारम्भ पक्के कर लेना और व्याकरण भी सीख लेना। तबीयतकी बात तो है ही। वजन रहता है? तेरा शरीर सुधरना चाहिये। सरस्वतीचन्द्र का पहला भाग मुझे बहुत पसन्द आया था। परन्तु चारों ही भाग पढ़ डालने चाहिये। काव्य-दोहन के चार भाग हैं। वे पढ़ लिये जायं। करण घेलो और वनराज चावडो तथा नर्मदाशंकर और नवलराम नभुभाईके कुछ लेख पढ़ जाने चाहिये। इतना पढ़ लेनेसे गुजराती भाषाका स्वरूप हाथ आ जायगा। ये पुस्तकें इकट्ठी करके तू ही यहां पहुंचा सकती है।

रीलेन्डकी साविकाके आनेका मुझे तो पता ही नहीं था। किंग्सले हॉल[1] लिखूंगा। रोलां[2]की पुस्तकें मिल गयी हैं। पढ़ूंगा। तारादेवी[3] यहीं हैं। अुनका मेरे नाम पत्र भी आया है। वे और दूसरी बहनें आनन्द करती हैं। तारादेवीने रामायण मांगी है सो भेजूंगा। सुशीलाके दो पत्र आये थे। वह पत्र लिखनेका साहस करे तो प्यारेलालकी बहन कैसे कहलाये? लंकाशायरवाली पुस्तक (कमलनाथ) जोशीके पास गयी है। वापस आने पर पढ़ूंगा और राय दूंगा। जिस बार पुस्तकोंका ढेर जिकट्ठा नहीं किया। पुस्तकें आती तो रहती ही हैं। अनमें से भेजने लायक हाथमें नहीं आयी। रस्किन[4]के फोर्स क्लेविगेरा आये हैं। वे चाहिये तो भेजूं। प्यारेलालको शायद ही जिसमें नयी बात मिले। मेरे पास म्युरियल[5] और अगथा[6] तथा होरेस[7]के पत्र आते हैं। मेरा वजन जितना था अुतना ही अर्थात् १०९ पौंड बना हुआ है। खानेमें पिसे हुअे बादाम खजूर, सिकी हुअी रोटी नींबू और कोअी अुबला हुआ साग अेक बार — ये चीजें होती हैं। अभी तो दूधके बिना काम चल रहा है। जिस बार कब्ज बिलकुल नहीं है। नींद अच्छी है।

---

१ १९३१ में पू. बापूजी गोलमेज परिषदके लिये अिंग्लैण्ड गये अुस समय अुनका निवास यहीं था।

२ रोमां रोलां। फ्रांसके सुप्रसिद्ध शान्तिवादी और महान लेखक।

३ श्री प्यारेलालजीकी मां।

४ प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक। अुनकी 'अन्टु दिस लास्ट' (सर्वोदय) नामक पुस्तक पढ़कर गांधीजीके जीवनमें परिवर्तन हुआ था।

५ म्युरियल लेस्टर। क्वेकर सम्प्रदायकी शान्तिवादी अंग्रेज महिला। अमीर घरकी होते हुअे भी अुन्होंने विलायतमें मजदूरोंके मुहल्लेमें किंग्सले हॉलकी स्थापना की थी। पू. बापूजी गोलमेज परिषदमें गये थे तब यहां ठहरे थे।

६ अगथा हैरिसन। क्वेकर सम्प्रदायकी शान्तिवादी अंग्रेज महिला। अुनका हालमें ही देहान्त हुआ है।

७ होरेस अलेक्जेण्डर। शान्ति चाहनेवाले अेक अंग्रेज।

हाथकी खराबी अभी तक है, यह मैं देख रहा हूं। लेकिन अभी तक मुझको कोअी दर्द नहीं अनुभव करता। खाना थोड़ा होता है। अभी रस्किनका 'फोर्स' चल रहा है। लिखनेमें गीताका जो हिस्सा बाकी था वह पूरा हो गया। अब आश्रमका अितिहास[1] हाथमें लिया है। महादेवको लिखवाता हूं। आश्रमके पत्र काफी समय लेते हैं। बायें हाथसे लिखता हूं जिससे अधिक कातनेमें डेढ़ दो घंटे तक जाते होंगे। हाथके कारण अधिक जान-बूझकर नहीं कातता। दो दिनमें १७५ तार पूरे करनेका आग्रह रखा है। अभी पींजा नहीं। मीराकी दी पूनियां चल रही हैं। महादेवने पींजना शुरू किया है।

हरिभाअूके[2] बारेमें मैं पूछनेवाला था जितनेमें तूने ही पूछनेकी हिम्मत कर ली। वहां तूने क्या किया यह मुझे पूछना था वहीं तू ही मेरे गले पड़ रही है। मेरी शर्त बनी हुअी है। तू क्यों नहीं लिख सकती? तू चाहे जैसा लिख, सुधारना और पास करना तो मुझे है न? संकोच छोड़ कर लिखना है। तू प्रयत्न ही नहीं करती जिसमें अेक प्रकारका आलस्य होगा। जैसा हो वो मुझे लिखकर दे। तू जितना करे तो प्रस्तावना लिखना मैंने मंजूर किया है सो लिखूंगा। अभी प्रकाशित तो नहीं हो सकती मगर अेक बार लिख तो जाय तो बहुत अच्छा। बाहर निकलनेके बाद हो सकता है लिखना न हो सके। मेरा आग्रह सकारण है यह तो तू समझती है न? तेरे लेखके बिना पत्र सुशोभित ही नहीं होंगे। प्रकाशित नहीं किये जा सकते।

बापूके आशीर्वाद

---

१ यह अितिहास जेलमें अधूरा ही रह गया और अुसी रूपमें पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है। नाम है सत्याग्रह आश्रमका अितिहास — नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद–१४ कीमत १ २५ डाकखर्च ११।

२ मेरे गणित पत्र-साहित्यके सप्तम प्रस्तावनामें पहले सुलभा जीवन-वृत्तान्त रचना था। अुस सम्बन्धमें अुल्लेख है।

## ८५

बरवडा मंदिर,
२३-४-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तू आत्म-विश्वास रखेगी तो मेरी ऐसी आशा फलेगी। गंगा बहन (वैद्य) की कोटी और मोतीके बारेमें आश्रमको लिखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

## ८६

यरवडा मंदिर
८-५-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

अब तुम पत्र लिखे जायं या नहीं यह सवाल है। परन्तु तेरा कार्ड आया है जिसलिये लिखना लिख रहा हूं। जवाबकी प्रतीक्षा किये बिना पत्रियां हो जाय तो अच्छा। परन्तु तेरे पास समय है या नहीं यह तू जाने।

बापू

खानेमें पूरी सावधानी रखना। बीमार न पड़ना।

## ८७

यरवडा मंदिर
११-५-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

पत्र बहुत मधुर है। गुजरातीमें मैं जवाब तैयार कर चुका। मगर ज्यादा देरी भी मैं बरदाश्त नहीं करूंगा। पर हो सकने बाद पत्र

१ श्री प्यारेलालजी तथा श्री कृष्णदासजीके हस्ताक्षरोंमें लिखा।

२ मीठास-भरा सुन्दर प्रेम।

यहा मंगलामूला। अभी जल्दी तो है ही नहीं। फुरसतसे मेरे लिखनेकी ही बात है।

मैंने तुझे पत्र लिखवाये अुन्हीकी तू बात कर रही है न? यदि यही है तो किसी दिन मित्र जिससे लिखवाये अुनका संग्रह प्रकाशित होगा तो अुसमें वे भी आ जायेंगे। अलग प्रकाशित करनेमें कोअी खास हेतु है?

तू जून मास तक मुकाम पर न पहुंचे और पहले रस्तेमें आवे तब महादेवसे भी मिल लेना। प्यारेलालका क्या हुआ? सुशीला मुझसे मिलना चाहे तो मिल सकती है।

बापूके आशीर्वाद

## ८८

यरवडा मंदिर
२२-५-'३२

चि. कुसुम (बड़ी)

प्यारेलालके सवालका जवाब मैंने दिया था वह तूने अुसे पहुंचा दिया था? प्यारेलालको मेरी तरफसे कुछ मिला है अैसा नहीं दीखता।

मेरे नाम लिखे पत्र छपवाने ही चाहिये।

बापू

## ८९

यरवडा मंदिर

## ९१

यरवडा मंदिर
१—७—३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरे पत्र कुछ तो बिलकुल निकम्मे आते हैं। जैसा कि अिस बारका। अगर कुछ भी लिखनेको न सूझे तो बिलकुल न लिखना ही बेहतर होगा। लिखनेको न सूझना भी दोष तो है। परन्तु कोरे कागजकी तरह लिख भेजनेसे यह दोष धुल नहीं जाता परन्तु वह अिसे पक्का करता है।

बापू

## ९२

यरवडा मंदिर
१७—७—३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। अिसमें सारे जवाब नहीं आ जाते। जबानी पूछे हुअे प्रश्नोंके तेरे दिये हुअे अुत्तरोंका पूरा स्मरण अिस समय नहीं हो सकता। अुसके आधार पर कुछ लिखना ठीक नहीं होगा। अिसलिअे मैंने वे प्रश्न फिरसे दोहराये थे। मगर अब तुझे नहीं सताअूंगा। तूने जो कुछ भेजा है अुस परसे क्या हो सकता है यह देख लूंगा। तेरी समझ जो जिस तरह तूने सीखा है वह दुरुस्त है तो भी मैं निराश नहीं होता। मेरा विश्वास है कि तू लायक है। प्रयत्न भी अपनी शक्तिके अनुसार करती है जिससे किसी दिन तुझमें वास्तविक शक्ति आ जायगी। मैं चाहता हूं कि तू स्वयं अपना विश्वास रखे। तू स्वयं आत्मविश्वास रखेगी तो दूसरोंका विश्वास स्वयमेव ही काम देगा।

हम सब आराममें हैं। महादेव काफी मजेमें रहते हैं। दांतका मामला अब अनिश्चित हो गया है।

बापू

## ९५

यरवडा मंदिर
२५-८-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिला। जिस पत्रमें तूने मेरे प्रश्नका अुत्तर देनेका प्रयत्न किया था अुसके अुत्तरमें पत्रमें मैंने लिखा था कि दूसरे पत्र आने पर मैं काम हाथमें लूंगा। दूसरे पत्र अर्थात् जिन्हें छपवाना है वे। अुन्हें देख लेनेकी जरूरत समझता हूं। तेरे संकोचने मेरा काम कठिन बना दिया है। जब तक हरिलालके जिस सम्बन्धका स्पष्टीकरण न कर दिया जाय तब तक पत्रोंका मूल्य नहीं रहेगा। यह स्पष्टीकरण तेरी लिखी हुी और तुझसे सुनी हुी तथा अुस समयके अुनके पत्रोंमें जो मिल जाय अुस हकीकतसे ही हो सकता है। मैंने जितना सोचा था अुससे यह जरा बड़ा काम हो जायगा। फिर भी निपटानेकी कोशिश करूंगा। मनोवृत्ति आजकल अैसे कामोंमें नहीं है। यह मेरे मार्गमें अेक विघ्न जरूर है। अन्तमें तो अीश्वर जो चाहेगा वही वह करने देगा।

बापू

## ९६

यरवडा मंदिर
११-८-३२

चि॰ कुसुम (बड़ी)

तेरा पत्र मिल गया। कौनसे पत्र — जिस सम्बन्धमें मेरा पत्र अब तुझे मिला होगा। तेरी अस्थिरता मैं यहां बैठे बैठे देख सकता हूं। परन्तु जिस अस्थिरतामें से किसी दिन स्थिरता जरूर आयेगी। मैं अपना विश्वास खो नहीं सकता।

## ९९

राजमोली
२१-१२-३३

चि. कुसुम

तेरे पत्रका तारसे उत्तर दे चुका हूं। तू बहुत देरसे चेती। तूने पत्र लिखना छोड़ दिया। मैं तो रोज प्रतीक्षा करता था परन्तु तू क्यों लिखने लगी? तेरा पत्र आया तब मेरे पास बहुत काम था। यहांमें तीन हैं। मीरा किशन ओम्। सब मिलकर हम नौ हैं। तू क्या करती है? समय कैसे बिताती है? प्यारेलाल लिखता है? वह कैसा है? हरिजनबन्धु पढ़ती है? मेरा शरीर ठीक रहता है। सफर बरदास्त करता है।

बापूके आशीर्वाद

## १००

(मुरादाबाद)
७-२-३४

चि. कुसुम

मेरे किसी सम्बन्धी — भाभी? — के संबंधमें मुझसे बातेंकी बात अस्पष्टसी लिखते हैं। वह कौन हो सकता है? मीरा बेबता और दूसरा जो भी मेरे ध्यानमें लायक हो सो बताना। ऐसी हमी बातमें न मिली हो तो मिलनेका प्रयत्न करना। हरिजनबन्धु पढ़ती है न? मेरे बारेमें सब कुछ उसमें आता जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

१ मेरा दामाद भाभी हरिश्चन्द्र पूरी अफ्रीकामें कोई कुमारसे गुजर गया था। उसका उल्लेख है।

अभी तक मेरा जाड़ा कहाँ हुआ है? वह तो बहुत दूर है। मेरी अिच्छा १२५ वर्ष जीनेकी है और तू मुझे सौ वर्ष ही दे रही है। यह दूसरी मूर्खता! पुष्पा[1]की अुमर कितनी? मभिमाओं[2]को आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

## १०३

नयी दिल्ली
२१-१-'४८

चि॰ कुसुम

अिस बार मैं कांग्रेसमें जाअूंगा या नहीं अिसका पता नहीं। अिसलिअे मुझे भूल जाना। वहाँ जाना ही हो तो स्वतंत्र बन्दोबस्त करना। अभी तो बंगाल जानेकी तैयारी है।

बापूके आशीर्वाद

---

[1] मेरी छोटी बहन।

[2] मरीडेमें सब अुन्हें कलकत्तावाले कहते हैं। बम्बअीमें मैरीट ऑफिस मेक्स ? कंपनीके नामसे व्यापार करते हैं।

तारीखको आश्रममें हूँगी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। तू तो आती ही नहीं। तुम्हें अच्छा लगे तो अहमदाबाद जाओ चाहे बम्बई जाओ। शाहीबहनको मेरे आशीर्वाद। अभी तक मुझसे दाँतोंका मिलाप चल रहा है, जैसा मीठुबहन मुझे कह रही थीं। आजकल बापूजीका वजन बढ़ गया है। पहले आमको छूते नहीं थे। अब लेने लगे हैं। आजकलका मुनका पता प्रभावती मारफत बाबू ब्रजनारायण सहाय ब/२७ हार्डीकोर्ड क्वार्टर्स पटना।

चि. प्यारेलालजी कहते हैं कि तुम अहमदाबाद जाओगी।

बापूके आशीर्वाद

## ५

महाका पता बिरला मिल्स

दिल्ली
ता ———
जुलाई रविवार

बहन कुसुम

बड़ौदा स्टेशन पर तू और मणिभाभी[1] दोनों आये थे। थोड़े दिनोंमें बहुत श्रम हो गया था। वहाँसे मैं सूरतके स्टेशन पर पहुँची। स्टेशन पर कल्याणजीभाभी[2] लेने आये थे। बादमें मैं सूरतमें शाम तक रही और ९ बजे मरोली जानेको निकली। मरोलीमें तीन दिन रही। मीठुबहन बीमार थी जिसमिले वे मरोलीमें नहीं थीं। यहाँ तीन

१ श्री रामजीभाई नानाभाई पटेलकी पत्नी।

२ जिस पोस्टकार्ड पर पोस्टकी जो मुहर लगी है उस पर ता [illegible] पढ़ी जाती है।

३ श्री कल्याणजीभाई।

४ सूरत जिलेके एक प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता।

मीठुबहन पीटिट। मरोली आश्रम — कस्तूरबा सेवाश्रमकी संस्थापिका संचालिका।

यहां आ गयी हूं। मुझे लगभग अेक महीना लगेगा। लक्ष्मी[1] दो बालकोंको लेकर मद्रास गयी है। रामदासभी दिल्ली जाने तक उसे साथ ले गये थे। वसुमतीबहन आजकल यहां आयी हुयी है। दीवाली तक रहेगी। वे कैसा कहती थी कि कुसुम बड़ौदेमें है। इसलिये तुझे नहीं पत्र लिख रही हूं। आजकल तू वहां क्या काम करती है?

कान्ति[2] अपनी मौसीके पास बम्बई गया है। प्रभावती[3] और जयप्रकाश यहां हैं। निर्मला[4] वर्धेमें है। मनु यहीं है। लीलावती[5] यहां आयी है। बहुत संभव है वह तीन महीने रहेगी। मैं मणिभाभी[6] को खूब याद करती हूं। उनको और बालकोंको नये वर्षके आशीर्वाद। ईश्वर तुम सबको सुख-शान्तिमें रखे। हेत प्रीतसे अधिक क्या चाहिये? तेरी तबीयत अच्छी होगी।

निस नये वर्षके तुझे मेरे शुभ आशीर्वाद। ईश्वरसे प्रार्थना है कि तू किसी प्रवृत्तिमें लग जाय। पत्र लिखती रहना। तू अगर तेरी माके पास जाय तो उनको और भाभियोंको मेरे आशीर्वाद कहना। तेरी माकी तबीयत अच्छी होगी।

बाके आशीर्वाद

---

1 श्री देवदास गांधीकी पत्नी।

श्री हरिलाल गांधीका पुत्र।

3 श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी।

4 [illegible] सम्पन्न परिवारकी अेक बहन। बापूजीके आदर्शोंसे आकर्षित होकर उनके साथ रहने आयी थी।

श्री रामदास गांधीकी पत्नी।

6 [illegible] आसर। [illegible] बहन।

श्री [illegible]।

दुखे हैं। अपना आज कोई आवश्यक नहीं है। तू पूना हो आयी होगी। सरोज[1] से मिली होगी। तेरी माको मेरे जय श्रीकृष्ण। मणिभाभी बालको वगैराको मेरे शुभाशीर्वाद। गंगाबहन[2] को मेरे प्रणाम। मुनके बापुकी तबीयत कैसी है? मेरा पांव अच्छा हो रहा है। डॉक्टर रोज गरम पानीका सेक करता है। अभी पट्टी छूटी नहीं है। वहांके सबे मुझे समाचार लिखना।

बाके आशीर्वाद

तू गयी उसके बाद मुझे यहां बड़ा सूना लगता था।[3]

८

सेगांव वाया वर्धा,
२७-११-३७

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला। बापूजी कहते हैं कि तू आये तो कोई असुविधा नहीं होगी। परन्तु यहां रहनेके लिये जगह नहीं है। सब भरी हुई है। और तुमसे काम भी बापूजी नहीं ले सकते। यहां अमतुस्सलाम प्रभावती और डॉ॰ सुशीला (प्यारेलालकी बहन) हैं। वे बापूजीका सब काम करती हैं। मीरा और लीलावती तो हैं ही। इसलिये फिलहाल आना मुलतवी कर दे तो अच्छा।

---

[1] श्री सरोजबहन नानावटी। श्री काकासाहब कालेलकरकी भतीजी।

[2] श्री गंगाबहन वैद्य। आजकल बोचासणके वल्लभ विद्यालयमें काम कर रही हैं।

[3] यह वाक्य बापूने अपने हाथसे लिखा था।

## ११

सेगांव
१-५-३८

चि. कुसुम

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। पू. बापूजी तो रविवारकी रातको पेशावर पहुंच गये। ९ तारीखको वहांसे चल कर ११ तारीखको बम्बअी आयेंगे। १२ तारीखसे तो बम्बअीमें सभायें होंगी। अिसलिअे बापूजी थोड़े दिन वहीं रहेंगे। फिर तो शायद बम्बअीमें ही रहेंगे या वहीं अन्यत्र समुद्रके किनारे भी जायं। मैं कल सुबह जयपुर जा रही हूं। वहांसे थोड़े दिन दिल्ली रहकर देहरादून निमु[1]से मिलने जाअूंगी। अिस प्रकार लगभग अेक महीना हो जायगा अिसलिअे अिस बार मीठूबहन[2]के पास नहीं जा सकूंगी। वहां भी गरमी तो खूब पड़ती है।

हरिजन में तो तूने सब पढ़ा होगा। बापूकी तबीयत ठीक है। परन्तु काम करते हैं तो रक्तचाप बढ़ जाता है और फिर आराम लेते हैं तो अुतर जाता है। चि. कान्ति[3] यहीं है। सरस्वती[4] भी आयी है। दोनों मेरे साथ आ रहे हैं। यहां सब मजेमें हैं। विजया अपने साथ गयी है। वह थोड़े दिनोंमें वापस आ जायगी। अगर तू अिस बार आती तो सब मिल लेते। परन्तु अब तो कौन जाने कब मिलेंगे। बापूके साथ तो महादेवभाअी प्यारेलाल सुशीला और मनु गये हैं। मोहनभाअीकी तबीयत अच्छी जानकर आनन्द हुआ। अुन्हें तू पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद

---

१ श्री रामदास गांधीकी पत्नी।

२ श्री मीठूबहन पीटीट। जिनकी मरोलीमें कस्तूरबा आश्रम चलती है।

३ श्री हरिलाल गांधीके पुत्र।

४ श्री हरिलाल गांधीके पुत्र कान्तिभाअीकी पत्नी।

# १२

सेगांव
१९-९-३८

चि. कुसुमबहन

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा १ तारीखका पत्र मिल गया था और मैने अुसका जवाब भी चि. कनुसे लिखवाया था। वह तुम्हें क्यों नहीं मिला? चि. कनुका पत्र अुसे दे दिया था। पू. बापूजीका स्वास्थ्य अच्छा है। रक्तचाप बढ़ता घटता रहता है। कामका बोझा तो दिमाग पर रहता ही है। आजकल देशमें जो अशान्ति फैली हुई है अुसका अुनके मन पर काफी बोझा रहता है। देशी राज्योंमें खलबली हो रही है अुनके सिलसिलेमें भी बहुत पत्र आते हैं। और अुनमें सब सलाह मांगते हैं। जिससे दिमागको काफी श्रम पहुंचता है। खुराकमें दिनभरमें आधा सेर दूध लेते हैं। थोड़ासा साग लेते हैं। मोसंबी लेते हैं और खाखरा या रोटी थोड़ीसी लेते हैं। १ तारीखको दिल्ली जायंगे यह तुमने अखबारोंमें देखा होगा। मैं भी जाअूंगी। चि. कानम[1] मजेमें है और मेरे साथ आयेगा। चि. मनु[2] यहीं है सुशीला[3] भी है। बापूजी जायंगे तब मनु बम्बई जायगी और सुशीला अपनी माके पास अकोला जायगी। अब गांवमें हैजा नहीं है परन्तु मलेरिया फैला हुआ है। मनुको दो दिन बुखार आ गया था। अब नहीं है। रामदास अफ्रीकासे आ रहा है और आजकलमें बम्बई अुतरेगा। प्यारेलालजी अब अच्छे हैं। अुनकी माताजी आयी हैं। ये सब भी दिल्ली जायंगे। शायद जानेका पता तो दिल्ली जानेके बाद चलेगा। महादेवभाओीका स्वास्थ्य बीचमें बिगड़ गया था। रक्तचाप बढ़ गया था। डॉक्टरने दूध-फल पर रहनेको कहा है। तो भी बीचमें अेक दिन बहुत लिखा-पढ़ा होगा जिसलिअे चक्कर आ

---

१ श्री रामदास गांधीका पुत्र।

२ श्री हरिलाल गांधीकी लड़की।

३ श्री मणिलाल गांधीकी पत्नी।

गये थे। अब दो दिनसे अच्छे हैं। भाभी नानावटी[1] काकासाहब बीमार थे अिसलिये अुनके पास गये थे। परसों आ गये हैं और यहीं रहेंगे। और सब मजेमें हैं। लीलुका पत्र आता है। अुसकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। अब तुम पत्र लिखो तो दिल्लीके पते पर लिखना। मारफत देवदास गांधी हरिजन बस्ती किंग्सवे दिल्ली।

बापूके आशीर्वाद

## १३

हरिजन बस्ती
दिल्ली
४-१ -३८

चि. कुसुम

तुम्हारा पत्र मिल गया था। बापूजीकी तबीयत अच्छी है। बापूजी आज पेशावर जा रहे हैं। साथमें प्यारेलाल जी सुशीला ब्रजकृष्ण[2] अमृत और बनु जा रहे हैं। मैं भी यहां देवदासके पास रहूंगी।

महादेवभाऔकी तबीयत अच्छी रही। महादेवभाऔ और दुर्गाबहन और भी बापूजीके पेशावरसे लौटने तक दिल्ली शहरमें ही (यहां नहीं) रहेंगे।

तेरी तबीयत अच्छी होगी।

शुभेच्छा
बापूके आशीर्वाद

---

१ अुस समय काकासाहबका हिन्दी प्रचार काम करते थे।

२ दिल्लीके ब्रजकृष्ण चांदीवाला। बापूके भक्तके रूपमें बापूके साथ [illegible] रहे थे।

३ स्व. श्री महादेवभाऔकी पत्नी।

१४

सेगांव
१९-११-३८

चि॰ कुसुम

तेरा बहुत समयसे कोअी पत्र नहीं आया। मुझे दीवाली पर लिखनेका विचार किया था परन्तु अुस समय मेरी तबीयत खराब थी। अिसलिये नहीं लिख सकी।

बापूजी तो पेशावर सवा महीने रह आये।

मणिलाल सुशीला और बालक कहां हैं? अुन सबकी तबीयत अच्छी होगी।

बापूजीकी तबीयत अच्छी है। काम तो बहुत रहता है।

यह पत्र मिलने पर अुत्तर लिखना। महादेवभाअीका स्वास्थ्य अच्छा है। वे डेढ़ महीने शिमला रह आये। १२ तारीखको महादेव भाअी यहां आ रहे हैं। तीन चार दिन रहनेके बाद फिर कहीं आबहवा परिवर्तनके लिये जायेंगे।

रामदास अफ्रीकासे आ गया। परन्तु अुसकी तबीयत अभी तक सुधरी नहीं। अेक मासके लिये पूना आबहवा बदलने गया है। आबहवाके साथ अुपचार भी चलेगा।

बाके आशीर्वाद

१५

वर्धा
२९-११-३८

चि॰ कुसुम

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। मेरा खयाल है कि तेरा पत्र दिल्लीमें आया था। परन्तु मेरी तबीयत अच्छी नहीं थी अिसलिये मैंने तुझे पत्र लिखा था नहीं यह याद नहीं। बापूजी सरहद गये तब मैं दिल्लीमें ही थी। अब मेरी तबीयत अच्छी है। बापूजीकी तबीयत अच्छी है। काम खूब है। लिखनेका काम बहुत रहता है। लोग

पहुंच मिलने आते हैं। महादेवभाअीका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं है अिसलिये बापूजीको लिखनेका काम बहुत रहता है। काका मजेमें है। गौमुकी पढ़ाअी बहुत कुछ पूरी हो गयी। अब थोड़ीसी बाकी है। तीनेक महीनेकी पढ़ाअी और है। आजकल वह अपनी मांके पास अक्वतरमें है। सुशीला अकोलामें है। महादेवभाअी शिमलेसे यहां आये हैं। दुर्गाबहन शिमलेसे सीधी अहमदाबाद गयी है। और वहांसे बलसाड़ अपनी बहनके पास जायेंगी। महादेवभाअी थोड़े समय यहां रहेंगे। जितना होता है अुतना काम करते हैं। फिर थकता है तब नहीं करते। आज कल तो राजकोटमें खूब लड़ाअी चल रही है। जनवरीकी २ तारीखको हम बारडोली जायेंगे। तब हम लोग मिलेंगे। मणिलाल भी वहां आयेगा तो मिलेंगे। यहां सब मजेमें हैं। तुम्हारी मांको मेरे जय श्रीकृष्ण कहना।

बापूके आशीर्वाद

१९

द्वारा फर्स्ट मेम्बर अिन कौंसिल
राजकोट,
माघ
१७-२-३९

चि. कुसुम

अभी अभी तेरा पत्र आया। अुसमें तू लिखती है कि फजह मुहम्मद लानेसे ही यह पत्र लिखा होगा। अुन्होंने मुझे बातकी लिखा पत दी है। तूने बापूजीको पत्र लिखा है। तेरो क्या परिणाम आता है। तेरा प्रेम तो मुझ पर बहुत है। लेकिन तू जानती है न कि मैं नजरबन्द हूं? बंगलेमें अन्दर रहती हूं। लेकिन बंगलेके अहातेके बाहर नहीं जा सकती। अभी वे कहें कि मोटरमें घूमने जाना हो सकता है। लेकिन राजकोटके भीतर तो मुझे जाने ही नहीं देंगे। और मुझे किस तरह घूमने जाना भी नहीं है।

मेरी तबीयत भी अब ठीक है। दो दिनसे जिसे बिगड़ी थी। लेकिन मैं खाती हूं पीती हूं चलती-फिरती हूं। मैं रोगशय्या पर

नहीं पड़ी हूं। और मेरे पास दो लड़कियां हैं यह तो तू जानती ही है। मणिबहन[1] और मृदुला[2]। स्टेटकी अेक नर्स भी मेरे लिये रखी गयी है। मैंने तो डॉक्टरसे कह दिया कि नर्सको ले जाओ क्योंकि सेवा तो ये लड़कियां भी दे सकती हैं और मैं खुद अपने हाथसे भी ले सकती हूं। सेवा मुझे केवल खांसीकी ही लेनी पड़ती है। दूसरी कुछ नहीं।

यहां हमें त्रंबामें अेक छोटे बंगलेमें रखा गया है। बगीचा है जिसमें हम सुबह-शाम घूमती हैं। पाखानखाना है। दो तीन कमरे हैं। आगे-पीछे तीन तरफ बरामदे भी हैं। किसी तरहकी असुविधा नहीं है।

अुनकी (सरकारकी) अिच्छा हुअी तो अेक बार मणिको ले गये। और वापिस मेरे पास रख भी गये। और अिच्छा होगी तो फिर ले जायेंगे। मैंने तो अुनसे कहा था कि मेरे पास कोअी जेलकी बहन रखें वर्ना मुझे जेलमें ले जायें। ब्रिटिश राज्यकी जेलमें मुझे रखते ही थे न! पर यह सब तो तू जानती ही है। लेकिन यहां स्टेटकी जेलमें अुतनी सुविधा नहीं है। यहां मेरी खाने-पीनेकी सुविधा जुटानेमें सरकारको परेशानी हो सकती है। वह तो मुझसे कहती है कि आपको अपने जिन सगे-सम्बन्धियों या प्रियजनोंको बुलाना हो बुलाअिये। लेकिन मैंने ना कह दिया। जिन्हें जेलमें नहीं आना हो अुन्हें यहां क्यों बुलाअूं? और सरकार तो फिर अखबारोंमें लम्बे-लम्बे स्टेटमेन्ट (वक्तव्य) निकालेगी कि बाके पास यह रहती है और बाके पास हम अुसे रहने देते हैं। मैंने कुछ भी नहीं कहा था फिर भी कलके टाअिम्स में मेरे बारेमें यह झूठा समाचार छपा है कि मुझे त्रंबास्थल पसन्द नहीं आया। यह समाचार तो तूने देखा ही होगा?

मेरी तबीयत अच्छी है। बापूजीको भी अैसा लिख देना।

वहां मणिलाल सुशीला और बच्चोंको मेरे आशीर्वाद।

---

१ सरदार पटेलकी पुत्री।

२ अहमदाबादके सेठ अंबालाल साराभाअीकी पुत्री।

ये लोग मुझसे रोज कहते हैं कि आप चली जाअिये। अेक बार तो मुझसे कह दिया कि बापूजी बीमार हैं अिसलिअे आप जाअिये। लेकिन मैंने जांच की। पोस्ट आफिससे मैंने टेलीफोन करके खुद बापूकी पूछताछ की। अिसलिअे फिर वापिस आये। ये तो सिर्फ आपके रास्ते खोजते हैं कि म कैसे और कब यहांसे जाअूं। अिसलिअे तू यहां आनेका विचार छोड़ ही देना।*

बाके आशीर्वाद

---

* नोट — राजकोट सत्याग्रहके समय पू. कस्तूरबा वहां नजरबन्द थीं अुस बीच बीमार हो गयी थीं। अुस समय अुनकी सेवा शुश्रूषाके लिअे मैंने वहां जाने और सेवाके लिअे बाके पास रहनेकी मांग की थी। अुसके जवाबमें राजकोटके ठाकोरसाहबकी ओरसे नीचेका पत्र मिला था

अमरसिंहजी सेक्रेटरियेट
राजकोट स्टेट,
१४–२–३९

श्रीमती कुसुमबहन हरिलाल देसाअी

आपके ता. १२–२–३९ के पत्रके जवाबमें यह सूचित किया जाता है कि आपने पूज्य कस्तूरबाकी सेवा-शुश्रूषाके लिअे यहां आनेकी जो अिच्छा बताअी है अुसके बारेमें आप कस्तूरबाको लिखें। और अगर वे वैसा करनेके लिअे राजी हो जायेंगी तो आपको सेवा-शुश्रूषाके लिअे यहां आने दिया जायगा।

शुभेच्छक
फतेहमुहम्मद खान

## १७

सेवाग्राम आश्रम
११-३-४

चि. कुसुम

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। तूने अखबारमें पढ़ा सो सही है। अब तबीयत अच्छी है। यहां सभी देखभाल कर रहे हैं। कल बापूजी कांग्रेसमें जा रहे हैं। मैं कमजोरीके कारण नहीं जाऊंगी। यहां अब गरमी पड़ने लगी है जिसलिये तुझे यह स्थान अनुकूल नहीं मालूम होगा। मेरी यहां डॉ. सुशीला शकरीबहन[1] अमतुस्सलाम वगैराकी देखभाल है। मणिभाभी सुशीलाबहन वगैराको आशिष। मैं सबको याद करती हूं। मुझे बार बार खांसी हो जाती है — सांस फूलता है। पत्र जल्दी लिखना था लेकिन मुझे भी दो तीन दिन हो गये। जिस ओर आते जाते किसी समय उतर जाना। रामदास और देवदासके पत्र आते हैं। अभी लिखना है।

बाके आशीर्वाद
द. चिमनलाल

राजकुमारीबहन[2] सदा बापूके पास रहती है। कभी कभी जहां भाषण वगैरा कोई खास काम होता है तो बाहर जाती है।

---

१ सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलाल शाहकी पत्नी।
२ राजकुमारी अमृतकौर।

## परिशिष्ट

## १

## बापूजीके दो पत्र

### (१)

आश्रम साबरमती
५-१ -२८

भाअी शंकरभाअी[1]

आपका पत्र मिला। यह मेरा सन्देश है। चरखा-द्वादशीके दिन जो लोग आयें अुनसे कहना कि अगर हरिभाअीके नामको वे कपड़वंजमें अमर बनाना चाहते हों तो अुनके कामको अमर बनायें। चाहे जितनी कठिनाअियां आवें तो भी अुनकी आरम्भ की हुअी अेक भी प्रवृत्तिको न तो छोड़ें और न शिथिल होने दें।

मोहनदासके आशीर्वाद

### (२)

आश्रम साबरमती
१५-८-२९

भाअी चन्द्रकान्त

चरखा-द्वादशीके दिन भाग लेनेवाले सब लोग पिछले बारह महीनोंमें अपने काते हुअे सूतका हिसाब करें। और यदि यह सूत

१ मेरे पति स्व श्री ह भा देसाअीकी स्मारकरूप सेवामंडल संस्थाके आद्य स्थापक। मेरे देवर।

२ कपड़वंजमें सेवामंडलके कार्यकर्ता तथा म्युनिसिपैलिटीके भूतपूर्व अध्यक्ष।

जिससे वर्षके सूतसे कम निकले तो चरखा-द्वादशी मनाना बन्द करनेका प्रस्ताव पास करके यह चरखा-द्वादशी मनायें। जिससे सच्ची प्रभुसेवा होगी और तुम्हारे मंडलकी रक्षा होगी चरखा-द्वादशीकी लाज रह जायगी। यही मेरा सन्देश है।

मोहनदासके आशीर्वाद

## २

## श्री हरिलाल माणिकलाल देसाअीके जीवनका संक्षिप्त परिचय

समुद्रके अन्तस्तम गर्भमें छिपे रत्नकी भांति और बीहड़ जंगलमें विकसित होकर झड़ जानेवाली कुसुम-कली जैसा हरिभाअीका जीवन अुनके साहित्य समाज राजनीति संस्कृति अित्यादि अनेक क्षेत्रोंमें बहुमूल्य काम अदा करने पर भी प्रशस्तिसे दूर ही रहा है।

हरिभाअीका जन्म कपड़वंजमें सन् १८८१ के सितम्बर मासकी ४ तारीखको हुआ था। अुदारता और समानताके सद्गुण बाल्यावस्थासे ही अुनमें अच्छी तरह विकसित हुअे थे। विद्यार्थी हरिभाअी कम बोलनेवाले थे परन्तु सत्यप्रिय थे। प्रारंभिक अध्ययन कपड़वंजकी देहाती पाठशालामें पूरा करके सन् १८८९ से १८९४ के बीच हरिभाअीने सूरतके मिशन हाअीस्कूलमें मैट्रिक तककी पढ़ाअी पूरी की। अुसके बाद अहमदाबादके गुजरात कॉलेज बड़ौदा कॉलेज और बम्बअीके सेंट झेवियर्स कॉलेजमें अध्ययन किया और सन् १० १ के अक्तूबरमें अितिहास और अर्थ शास्त्रके विषयोंके साथ बी अे की अुपाधि प्राप्त की।

कॉलेजके अध्ययन-कालमें अुत्तम मित्र जुटाने और जीवन-पर्यन्त अुन्हें मित्र बनाये रखनेकी बात थोड़े ही भाग्यशालियोंके जीवनमें संभव होती है। हरिभाअीको यह अलभ्य लाभ मिला था। स्वतंत्र भारतमें महत्त्वका स्थान सुशोभित करनेवाले प्रतिष्ठित लोगोंमें से कुछ हरिभाअीके कॉलेज जीवनसे लेकर अन्त तक अुनके अभिन्न रहे थे।

बी. ओ. होनेके बाद थोड़े समय प्रागजी सूरजीकी पेढ़ीमें काम करनेके बाद हरिभाअी सन् १९०९ में अुमरेठ पब्लिक अिन्स्टिट्यूटमें हेड मास्टरके रूपमें शुरूमें काम करके दूसरे ही वर्ष बड़ौदा हाअीस्कूलमें फ्रेंच शिक्षकके रूपमें बड़ौदा राज्यके शिक्षा-विभागकी नौकरीमें लग गये।

हरिभाअीको बड़ौदेके अधिकारियोंने फ्रांस भेजकर फ्रेंचके प्रोफेसर बनानेकी अिच्छा प्रकट की थी। परन्तु श्री गोवर्धनरामके आदर्शके अनुसार ४० वर्षकी अुमरमें निवृत्ति लेकर सेवाकार्यमें ही जीवनकी कृत-कृत्यता अनुभव करनेके निश्चयवाले हरिभाअीने अिस बड़े सम्मानको स्वीकार नहीं किया।

फ्रेंच साहित्यके विपुल पठनसे अुसके आधुनिक हास्यरसका परिचय हरिभाअीको जितना अधिक हो गया था कि अनेक प्रसंगों पर वे अुसके मीठे मजाकवाले किस्से संबन्धियों मित्रों और शिष्योंको कभी कभी सुनाया करते थे। अल्पभाषी होने पर भी अुनकी बातोंमें मार्क ट्वेन या अनातोल फ्रांससे मिलता-जुलता सूक्ष्म तथा बारीक बुद्धिसे ग्राह्य विनोद खूब भरा हुआ था।

हरिभाअी प्रेम ममता और समभावकी मूर्ति थे। विद्यार्थियों और मित्रोंको आकर्षित करनेवाला कोअी जादू अगर अुनमें था तो यही था। अत्यंत विनयी तथा सुधारक माने जानेवाले मास्टर हरिभाअी प्राचीन गुरु-शिष्य-सम्बन्धकी प्रणालीको मानते थे। और अिस प्रणालीका पालन करानेके आग्रही भी थे। अिसलिअे श्रीमंत गायकवाड़ परिवारके कुमार भी विशेष ज्ञानोपार्जनके लिअे हरिभाअीके घर जाना पसन्द करते थे। किसी भी मौके पर अुन्हें क्रुद्ध होते नहीं देखा गया। अुनमें केवल मुँहकी मिठास अथवा कृत्रिम विनय ही होता तो वे सैकड़ों हृदयोंको जीत नहीं सकते थे। जिस प्रकार बड़ौदेमें हरिभाअीका शिक्षक-जीवन जैसा आदर्श था वैसा ही अुनका व्यापक जीवन भी आदर्श था। असलमें अुनके जीवनके अिन दोनों पहलुओंमें कोअी खास भेद नहीं था। अुनका घर अिन दोनोंका संगम-स्थान था।

स्त्री-शिक्षाको हरिभाअी मुख्य स्थान देते थे। हम सबको देश सेवा करनेसे पहले अपनी स्त्रियोंको ही खूब शिक्षा देनी चाहिये।

स्त्रियाँ पीछे रहेंगी तो वे पग पग पर बाधक होंगी' — ऐसा माननेके कारण हरिभाभी कहते थे कि मनुष्य केवल अपना घर ही सुधार कर बैठ रहे तो भी कम नहीं है। अेक घर भी संस्कारी बन जाय तो जिसके बराबर पवित्र काम दूसरा क्या हो सकता है? हरिभाभीने घरको सुधारने पर खूब सख्त परिश्रम किया। परिणाम-स्वरूप [illegible] कुसुमबहन मिलीं। श्री कुसुमबहनके साथके जीवनका सौरभ तो अुनके आदर्श गृहस्थ-जीवनका सर्वोत्तम अंग है। हरिभाभीका गृहस्थ-जीवन अनेक प्रकारसे लोकोत्तर था। किसी भी तरह दूसरोंके लिये अुपयोगी होनेकी भावनाके साथ यज्ञायोऽर्जिते लोको भोगायोऽर्जिते च मैं जैसी गीतामें कही गयी भावना अुन्होंने जीवनमें मूर्त की थी।

बंग-भंगके समय देशमें जागे आन्दोलनका असर हरिभाभी पर भी हुआ और वे गोखलेकी भारत-सेवक-समितिमें शरीक होनेके स्वप्न देखने लगे। अेक निश्चित समय तक नौकरी करनेके बाद वेतन लेकर कोभी काम करना ही नहीं यह भावना तो अुनमें बहुत जल्दी ही पैदा हो गयी थी।

जितनेमें गांधीजी अहमदाबाद आकर बसे। कोचरबमें श्री देसाभी बैरिस्टरके बंगलेमें आश्रम स्थापित किया गया। वहाँ अच्छे अच्छे लोग चक्की पीसने लगे बरतन मलने लगे जितना ही नहीं परन्तु सुबह शाम प्रार्थनाके समय प्रवचन भी होने लगे। जिस सारे समयमें हरिभाभी प्रत्येक रविवारको नडियादसे अहमदाबाद आकर आश्रमकी प्रवृत्तिमें अुपस्थित रहते और सच्चे भक्त-हृदयसे सब कुछ देखते थे।

बीच-बीचमें हरिभाभी नडियादसे अपने वतन कपडवंजमें भी आते जाते और अपने ज्ञान तथा सौजन्यका लाभ स्वजनों और मित्रोंको देते रहते। वे निश्चित रूपमें मानते थे कि पाठशालासे पुस्तकालयका असर अधिक व्यापक है। जिसलिये अपने वतन कपडवंजमें सन् १९१८ के नवम्बरमें छोटे पैमाने पर अुन्होंने वाचनालय और पुस्तकालयकी स्थापना की। जिसके बाद तो हरिभाभीने कपडवंजकी अनेक प्रकारसे सेवायें की।

गांधीजीका मंत्र अपनाकर हरिभाभीने १९१८ में कपडवंजमें खादीका काम शुरू किया और चरखा बुनाभी-कार्य आदिका प्रचार

पूरे जोरसे चालू किया। अिस कार्यके प्रति सारे गुजरातका ध्यान आकर्षित हुआ और गांधीजी जब सन् १९२१ के अप्रैलमें कपड़वंज पधारे तब अुन्होंने भी अिस कार्यकी तारीफ की थी।

हरिभाअीमें त्यागवृत्तिका विकास हो रहा था अितनेमें बड़ौदा हाअीस्कूलसे भावरन हाअीस्कूलके हेड मास्टरकी हैसियतसे अधिक वेतन पर अुनका तबादला हो गया। कोअी भी शिक्षक अैसे तबादलेका खुशीसे स्वागत करता परन्तु हरिभाअीके पूर्व-निश्चयके अनुसार निवृत्ति लेनेका और सेवाकार्योंमें पूरी तरह लग जानेका समय आ पहुंचा था अिसलिये अुन्होंने बड़ौदा राज्यके शिक्षा-विभागसे सन् १९२ में अपनी नौकरीसे अिस्तीफा दे दिया। यह तेरह वर्ष व्यापी अध्यापन कार्यका समय अुनके जीवनका साधना-काल माना जायगा। अुसके बाद गांधीजीसे आकर्षित होकर असहयोगके आन्दोलनोंमें शरीक होते हुअे तथा कपड़वंज-मर्हौंचमें सार्वजनिक कार्योंमें राष्ट्रसेवामें और अुत्तम साहित्य-रसका पान करते हुअे भी कुसुमबहनके साथ बिताये हुअे आदर्श दाम्पत्यके अंतिम सात वर्षोंका समय अुनके जीवनका सिद्धिकाल माना जा सकता है।

बड़ौदेकी नौकरीसे त्यागपत्र दिया अुसी दिन किसी भी सार्वजनिक संस्थासे आजीविकाका साधन लिये बिना जहां भी अुनकी सेवाकी जरूरत अुन्हें महसूस हो वहीं अनन्य भावसे समाज-सेवा और देश-सेवा करनेका अुन्होंने संकल्प किया। नौकरीसे मुक्त होनेके बाद मृत्यु-पर्यन्त किसी भी सार्वजनिक संस्थासे अपने अुपयोगके लिये अेक पाअी भी न लेनेके दृढ़ संकल्प पर कायम रहनेमें वे भाग्यशाली सिद्ध हुअे थे।

हरिभाअीके अिस त्यागसे कपड़वंजकी संस्थाओंको अत्यंत लाभ हुआ। कपड़वंजकी अनेक प्रकारकी सार्वजनिक प्रवृत्तियोंके वे प्रणेता बने। अखाड़ा पुस्तकालय बुनाअी-घर और राष्ट्रीय पाठशालाके सिवा १९२ के नवम्बरमें अुनकी प्रेरणासे कपड़वंजमें महालक्ष्मी अुद्योग-गृह स्थापित हुआ जो आज भगिनी-सेवा-समाजके नये रूपमें प्रगति कर रहा है।

अैसे अनेक कार्य आरम्भ करने पर भी हरिभाअीको मुख्य आकर्षण तो शिक्षाके क्षेत्रका ही था। अुन्होंने श्री छोटुभाअी पुराणीको वचन दे दिया था कि वातावरण और परिस्थितियोंकी अनुकूलताका विचार करके जब भी श्री पुराणी अुनकी सेवाकी मांग करेंगे तभी वे अुसे स्वीकार कर लेंगे। अत अपने अिस वचनके अनुसार वे भड़ौंच शिक्षा-मण्डलके स्वतंत्र कार्यमें शरीक हो गये और जीवन-पर्यन्त वहीं रहकर अुन्होंने शिक्षा-मंडल द्वारा साहित्य तैयार करनेमें श्री पुराणीका साथ देकर शिक्षा-मंडलकी सेवा की और डॉक्टर चंदुभाअी देसाअी तथा श्री दिनकरराव देसाअी वगैरा मित्रोंके साथ भड़ौंच सेवाश्रमकी स्थापनामें अग्रभाग लिया। भड़ौंच शिक्षा-मंडलके आश्रममें मैट्रिकसे अूपरकी कॉलेजकी कक्षा खोली गयी थी। जब तक यह कक्षा चली तब तक अुन्होंने शिक्षाका कार्य किया था। वे अिन कक्षाओंमें गुजराती साहित्य और अर्थशास्त्र दोनोंका अध्यापन करते थे।

हरिभाअीने अपनी सत्यनिष्ठा और काम करनेके सुघड़ ढंगसे महात्माजीका खूब विश्वास प्राप्त किया था और १९२ के सफरमें अुनके साथ रहकर अुनके सचिवके रूपमें पत्रव्यवहारका काम संभाला था। सन् १९२२में पू कस्तूरबाके साथ श्री हरिभाअी और कुसुम-बहनने सिंधकी यात्रा की थी।

अपनी पहली पत्नी श्री महालक्ष्मीबहनकी बीमारीमें अुनकी सेवा करनेका अपना धर्म हरिभाअी चूके नहीं थे। सन् १९१०में अुनका अवसान हुआ। बादमें १९२ में हरिभाअीने दरिद्र-नारायणकी सेवाकी दीक्षा ली। अुसके दूसरे वर्षमें श्री कुसुमबहन और हरिभाअीका विवाह हुआ। यह दूसरा विवाह श्री कुसुमबहनके आग्रहके वश होकर और अनेक वर्षोंके बाद ही हरिभाअीने स्वीकार किया था और अिस सम्बन्धमें पूज्य गांधीजीने भी हरिभाअीके स्वर्गवासके सिलसिलेमें श्री कुसुमबहनके नाम अपने पत्रमें संतोष प्रगट किया था जो नीचे लिखे शब्दोंसे स्पष्ट हो जाता है

मैं देखता हूं कि तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा अुनकी शिष्या अधिक थी। हरिभाअीसे ही शादी करनेका आग्रह तुम्हारा ही था। अित्यादि।

तब हरिभाऊजीने हंसकर कहा “मुझे मरनेका जरा भी शोक नहीं। मृत्यु मेरे लिये खेल है। कैसे मरना यह मुझे आता है।” मृत्युके बादकी अपनी पसन्दगीके बारेमें अेक बार हरिभाऊजीने विनोदमें कहा था प्रभु, मुझे मोक्ष आदि नहीं चाहिये। परन्तु जहां खूब काम किया जा सके और मेरा सारा स्नेही-मंडल तथा आलोचककी दृष्टिसे देखनेवाले मनुष्य भी हों वहीं मुझे जन्म देना।

जन्मान्तरमें भी जिस तरह सेवाभावकी लालसा रखनेवाले हरिभाऊजीकी यह बीमारी आखिरी साबित हुई और भड़ौचमें सन् १९२७ के जुलाओकी १९ तारीखको हरिभाऊजीने पार्थिव शरीरको छोड़ दिया। हरिभाऊजीने मरते मरते भी बहुतोंको जीना सिखाया। लोकोत्तर जीवनकी मृत्यु भी जिस प्रकार लोकोत्तर ही हुई। अुन्होंने मरणका भी हंसते हंसते ही अभिनन्दन किया।

हरिभाऊजी स्थायी आश्रमवासी नहीं बने थे और न सत्याग्रह आश्रम के सारे सिद्धान्त ही अुन्होंने स्वीकार किये थे फिर भी गांधीजीके हृदयमें अुन्होंने स्थायी और मुख्य स्थान प्राप्त कर लिया था। जिसलिये अुनके अवसानके बाद गांधीजीने ता ७-८-२७ के नवजीवन में अेक सत्याग्रहीका देहान्त शीर्षक हृदयस्पर्शी टिप्पणी लिखकर अुन्हें अंजलि दी थी।*

---

* वह टिप्पणी यह थी

भाओ हरिलाल माणेकलाल देसाओको नवजीवन के सभी पाठक नहीं जानते होंगे। अुनका देहान्त थोड़े दिन पहले भड़ौचमें हुआ। अुनके पास रहनेवाले मित्र लिखते हैं कि अुनके मुख पर अन्त तक आनन्दकी झलक दिखाओ देती थी।

भाओ हरिलालने असहयोगकी हलचलके समय बड़ौदा हाओस्कूल छोड़ा था। वहां वे फ्रेंच भाषाके शिक्षक थे। तबसे मृत्युके समय तक असहयोग पर अुनका विश्वास अविचल रहा था। अुन्होंने सत्यको जैसा देखा वैसा पालन करनेका यथाशक्ति प्रयत्न किया था। जिसलिये मैंने अुन्हें अेक सत्याग्रही कहा था। अुनकी नम्रता अुनके सत्यके आग्रहको सुशोभित करती थी। असहयोगके आरम्भ-कालमें अुन्होंने मेरे साथ कुछ

गुणात्मक दृष्टिसे देखें तो हरिभाभी अल्पायुमें ही बहुत काम कर गये। सेवा और स्वार्थत्यागका परमत-सहिष्णुता और व्यक्ति-स्वातंत्र्यका समभाव और सहानुभूतिका अुज्ज्वल दाम्पत्य और विशाल कुटुम्ब-भावनाका सादगी और सुन्दरताका शिक्षा और साहित्यका आतिथ्य और मैत्रीका तथा अुदात्त जीवनके जैसे अनेक सन्देशोंका अेक महान सन्देश वे केवल अुपदेशसे नहीं परन्तु प्रत्यक्ष आचरणसे दे गये। खास तौर पर अपने निजी नेतृत्वमें समाज-सेवकोंका छोटासा हरिभाभी मंडल खड़ा करनेका जीवनका अेक महान कार्य हरिभाभीने किया। जिसके प्रतीक-स्वरूप सेवा संघ और महागम लाअिब्रेरी हरिकुंज सोसायटी और हरि आवास्य हरिभाभीकी सेवा-भावनाके अमर स्मारकके रूपमें आज काम कर रहे हैं।

श्री वीरजलाल परीख

---

समय तक भ्रमण किया था। तब अुनकी काम करनेकी स्वच्छतासे अुनकी बारीकीसे और अुनकी सावधानीसे मैं मोहित हुआ था। अुस समय मेरे बहुतसे, पत्रोंके अुत्तर वे ही लिखते थे। और किसी तरह दूसरी सहायता भी करते थे। अुस सहवासके दौरानमें मैं देख सका था कि वे सत्याग्रह और असहयोगका सूक्ष्मतासे अध्ययन करते थे। कपड़वंजमें अुन्होंने केवल अपने ही प्रयत्नसे खादीका काम शुरू किया था और अुसे सुशोभित किया था। अन्तिम वर्षोंमें वे राष्ट्रीय शिक्षा-मंडलको मदद देते थे और जो कुछ सिखानेका काम अुनके सुपुर्द होता वह करते थे। सविनय कानून-भंग करनेका कोअी शुभ अवसर आये तब अुसमें अचूक जुड़नेवाले जिन पुरुषोंके नाम मैंने अपनी मानसिक सूचीमें दर्ज कर रखे हैं अुनमें हरिभाभीका नाम भी था। निर्दय कालने अुसे मिटा दिया है। परन्तु सत्याग्रहीको जिसका भी खेद नहीं होता। सत्याग्रही साथी जितनी जीकर मदद करता है अुतनी ही मरकर भी करता है। मर कर जीना तो अुसका महामंत्र होता है।

मो० क० गांधी

निकट परिचयमें आयें अिस हेतुसे अुन्हें अपनी बड़ी बहन भी अनुबहनके यहां कपडवंजमें रखनेकी व्यवस्था भी बड़ाबबहनने कर दी थी।

अिस प्रकार लगभग बारहवें वर्षमें भी कुसुमबहन हरिभाऊजीके परिचयमें आयी। अुसके बाद दो तीन वर्षका समय कुसुमबहनके लिअे जीवन-पाथेय भरनेका था। सार्वजनिक जीवनकी प्रत्यक्ष तालीम कुसुमबहनको प्रथम बार अिसी समय मिली। हरिभाऊजीके आरम्भ किये हुअे चुनावी-काममें स्त्रावी-विभागके हिसाब आदि कामकाजमें कुसुमबहन रखती थी। साथ साथ हरिभाऊजीने साहित्यके क्षेत्रमें भी कुसुमबहनकी दिलचस्पी पैदा की। कवि नानालालका 'जयाजयंत' गोवर्धनरामका सरस्वतीचन्द्र और नरसिंहराव कलापी कान्त ललित बोटादकर आदि कवियोंकी रचना साथ हरिभाऊजीने कुसुमबहनको पढ़ाना शुरू किया। अेशियाके कवि सम्राट टागोरकी गीतांजलि और 'साधना' के अनुवाद अुनके सामने रखे। पूज्य गांधीजीका हिन्द स्वराज्य और नवजीवन तो थे ही। अिस प्रकार हरिभाऊजीने अुनकी गुर्जर साहित्यका स्वतंत्र तुलनात्मक अध्ययन कर सकनेकी तैयारी करायी। अिस दिशामें बादमें बड़ौदाके परके 'रविवारी' यानी 'साहित्य वर्गों'ने अच्छा योग दिया। बुद्धिके विकासके साथ हृदयका विकास तो होना ही था रहा था और भावनोंके साथ अुत्कटता भुदारता और कलाप्रियताकी मानो जन्मसे ही अुन्हें देन मिली हो अैसा लगता था। यह सब करनेकी तहमें हरिभाऊजीकी दृष्टि तो आश्रम-जीवनकी तैयारी थी। नरनारीयोंमें अैसा आम तौर पर होता है कि अेक तेजस्वी अधिष्ठाता व्यक्तिके सामने — जैसे सूर्यके सामने आसमानके तारामंडल फीके लगते हैं वैसे — आसपास के तमाम व्यक्तियोंका व्यक्तित्व तेजहीन हो जाता है। अैसा न होने देनेके लिअे हरिभाऊजी सतत जागृत रहते थे। हरिभाऊजीके चरणोंमें अपना सर्वस्व अर्पण करके अुनके व्यक्तित्वमें अब तकसे अपना व्यक्तित्व लीन करके अेक ही आत्माके दो पहलू जैसी कुसुमबहनकी स्थिति होने पर भी दूसरी और व्यक्ति-स्वातंत्र्यके अमर हिमायती हरिभाऊजीने कुसुमबहनका स्वतंत्र व्यक्तित्व लोप न होने देकर अुसका विकास किया यह अिस हद तक कि अुनकी अन्तकी कल्पनामें भी वरिष्ठ अपने

व्यक्तित्वकी सुगंध ये जहां जहां रहीं वहां वहां फैली। यह सुन्दर मेल साधनेमें हरिभाऊजीकी आजन्म समर्थ शिक्षाकारकी शक्तिकी हमें साथ प्रतीति होती है। जिसके साथ कार्यके बोझसे दबकर कभी अुदासी या विषाद या खिन्नता न आवे परन्तु सदा पुष्पकी प्रफुल्लता कायम रहे, जैसा जगतकी सब घटनाओंमें आनन्द ढूंढ़नेका कीमिया भी हरिभाऊजीके स्वयंसिद्ध विनोद-प्रिय स्वभावके प्रतापसे कुसुमबहनके लिये सहज हो गया था। हरिभाऊजीको तो अपनी आत्मशक्ति सींचकर संसारके चरणोंमें अपनी सर्वोत्तम कृति रखनेकी अभिलाषा थी — स्त्रियोंमें संस्कार भरकर समाजको भूषा दे जानेके लिये कुछ आदर्श कुटुम्ब तैयार करना अुनका अेक मुख्य जीवन-कार्य था। पू. गांधीजीके आश्रम-जीवनसे वे खूब आकर्षित हुये थे और गांधीजीके रास्ते चलकर संयमी गृहस्थ-जीवन संभव है यह आदर्श वे समाजके चरणोंमें धरना चाहते थे। कुसुमबहनमें हरिभाऊजीको जैसा पात्र मिल गया जिसकी सहायता और सहयोगसे वे प्राचीन आश्रम-जीवनके आदर्शको अर्वाचीन ढंगसे आचरणमें ला सके।

हरिभाऊजीने नौकरीसे निवृत्त होकर शेष जीवन समाजके चरणोंमें समर्पण करनेका पैतृक सम्पत्तिमें से कुछ भी न लेनेका और अवेतन सेवा करनेका निश्चय किया था यह जानते हुये भी और लौकिक दृष्टिसे आयुका बड़ा अंतर होनेके कारण जिसे लोग सांसारिक सुख और स्त्रियां जिसे अपना परम सौभाग्य-सुख मानती हैं अुसके बारेमें हरिभाऊजीकी आयु और स्वास्थ्यको देखते हुये कोअी निश्चितता न होनेके बावजूद कुसुमबहनने अुन्हें अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया — जिनकी तहमें पत्नीकी अपेक्षा शिष्याका मनोभाव कितना प्रबल होगा यह पूज्य गांधीजीके नीचेके वाक्यमें स्पष्ट हो जाता है "जो लड़की अपनेसे बहुत बड़ी अुमरके पुरुषको पतिके रूपमें चुनती है वह शरीरको नहीं परन्तु अुस शरीरके स्वामीको चुनती है। तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा अुनकी शिष्या अधिक थी।"

अिस प्रकार, अुमरेठमें १९२१ में केवल तेरह वर्षकी अुमरमें विवाह करके अुन्होंने मढ़ीमें गार्हस्थ्य जीवन शुरू किया। हरिभाऊजीने अुनके परिचयमें आनेवाले विद्यार्थियोंमें जो संस्कार सींचे और अुन्हें

अेक ही मां-बापकी संतानोंमें भी दुर्लभ भ्रातृ-भावनाका जो मुदाहरि-
प्मर सींचा वुसे हरिभाअीका मुख्य जीवन-कार्य कहा जा सकता है।
जिसमें कुसुमबहनका भाग अति महत्वका था। और कुसुमबहन जैसे
साथीके अभावमें हरिभाअीकी महत्वाकांक्षामें शायद मूर्त स्वरूप नहीं
ले सकती थी यह अेक सचाअी है। श्री अम्बालाल पुराणीने हरिभाअीकी
आत्माको अंजलि देते हुअे हरिभाअीके जीवनका सर्वोत्तम कार्य
भी कुसुमबहनके साथके दांपत्यको बताया है यह बिलकुल यथार्थ है।
अुन कामोंमें अुनका मेहमान होना सभी जीवनका सौभाग्य मानते थे।
परन्तु अुनका विवाहित जीवन केवल सात ही वर्ष रहा और सन्
१ २७ में महीनेमें हरिभाअीका अवसान हो गया। अवसानके समय
कुसुमबहन द्वारा प्रदर्शित धैर्य और शान्ति विलक्षण थे।

हरिभाअीके अवसानके बाद कुसुमबहन सत्याग्रह आश्रममें पू  बापूके
पास चली गअी। जन्मदाता मां-बाप तो हीराभाअी और बड़ाबहन
थे परन्तु जन्मदाता मां-बापसे भी कअी गुना यथार्थ रूपमें अुनके मां-बाप
कोअी बन गये हों तो वे पू  बापू और पू  बा थे। कुसुमबहन सत्याग्रह
आश्रममें १९२७ से १९३  तक सतत रहीं। अुस दौरानमें पू  बापूका
गुजराती पत्रव्यवहार महादेवभाअी वगैरहके साथ वे भी सम्हालती थीं।
जिस प्रकार बापूके सचिवके रूपमें भी अुन्होंने कुछ समय काम किया था।
और पू  बा-बापूके साथ भारतकी यात्रामें भी अुस अवधिमें कुछ समय
वे साथ रही थीं। पू  बापू अमयोंसात बाहर भ्रमण जाने तब सत्या
ग्रह आश्रमके सभी विभागों तथा बाल-मंदिरका काम पू  बाके साथ
अुन्हें दिया जाता था अैसा अिस पत्रव्यवहारसे मालूम होता है।

१९३ –३२ की राष्ट्रीय लड़ाअियोंके समय अुन्न कार्योंकी
व्यवस्था तथा भड़ौच जिलेमें विदेशी कपड़े और शराब-ताड़ीकी
दुकानोंपर धरनेका काम अुन्होंने सम्हाल लिया था। १९३२ की लड़ाअीके
समय भड़ौच जिलेके गांवोंमें भी अुन्होंने भ्रमण किया था।

गुजरात विद्यापीठके रूपमें पुनी जाकर वीरमगाम सत्याग्रहके समय
अुनकी गिरफ्तारी हुअी थी। अुस समय वे साबरमती जेलमें पू
बाके साथ रामायण पढ़ती और चिंतन मनन करती थीं और तब ही

प्रसंगोपात्त अपराधी बहनोंसे भी मिलती-जुलती रहकर अुनके प्रति सहानुभूति प्रकट करती और अुनका पथ-प्रदर्शन करती थी।

सत्याग्रह आश्रम बिखर जानेके बाद वे थोड़े वर्ष बड़ौदामें बिताकर अन्तमें बड़ौदेमें स्थिर हो गयी हैं। पू॰ बा और बापूके जीते जी कभी कभी वे वर्धा या अन्यत्र अुनके पास थोड़े दिन बिताती और खास तौर पर बीमारीके समय अुनकी सेवामें अुपस्थित रहनेका प्रयत्न करती थीं। वे जगदम्बा पू॰ कस्तूरबाके विशेष प्रेमकी अधिकारिणी बनी थीं। पू॰ बापूका अुनके प्रति जितना अधिक वात्सल्य अुमड़ता था कि वे कहीं बाहर बीमार होतीं तो खबर मिलने पर कभी कभी बा स्वयं चलकर जाकर अुनकी तबीयतकी खबर ले आतीं।

बड़ौदे रहकर अुन्होंने प्रजा-मंडलके कामके द्वारा वे प्रजासेवामें योग देती रहीं। आजकल स्त्रियोंकी सहकारी संस्थाओं 'प्रेमानन्द साहित्य सभा' जैसी साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा महिला मंडल वगैरामें यथाशक्ति काम कर रही हैं। साथ साथ कपड़वंजको भी अुन्होंने अपने कार्यका मुख्य स्थान माना है। हरिभाअीके स्मारकके रूपमें एक छुटी सेवाश्रम संस्थाकी वे आज पिछले छह वर्षसे अध्यक्षा हैं। साथ ही अखिल भारतीय महिला परिषदकी कार्यकारिणीमें भी वे सदस्य रहीं तथा अुसकी शाखाके रूपमें कपड़वंजमें स्थापित श्री भगिनी-सेवा-समाजकी भी अध्यक्षा हैं। नडियाद बिट्ठल कन्या-विद्यालयकी कार्यकारिणी समितिकी भी वे सदस्य थीं।

अिन स्थूल कामोंके सिवा हरिभाअीकी शिष्य-मंडली और स्नेहियोंको हरिभाअी मंडल के रूपमें माताके मणकोंकी तरह अेकत्र बांधकर वे अुन्हें हरिभाअीके बताये हुअे लोकोत्तर सेवाकार्योंमें पथ-प्रदर्शन और प्रोत्साहन दे रही हैं। पू॰ गुरुदेव और पतिदेव हरिभाअीकी आत्माके अमृतमय आशीर्वाद सतत प्राप्त करते रहनेका जिससे अुत्तम कार्य और क्या हो सकता है?

भारत सतियोंका देश है। जगज्जननीके समान सन्नारियोंकी पवित्र अुपस्थसे भारतीय संस्कृति गौरवशाली बनी है। आर्य स्त्री तप त्याग आत्म-समर्पण और साथ ही पतिपरायणताकी पवित्र मूर्तिकी प्रतीक है। श्री कुसुमबहन भी वैसी ही आर्य सन्नारी हैं।

श्री धीरजलाल परीख

४

## स्व० पूज्य कस्तूरबा

पृथ्वीने आरो छे ने पृथ्वीमांनी मुक्तिन्तिनये आरो छे
के पळीनो मुक्तमन्ति मार्ग अवकाशने सामे तीरे छे
ने मृत्युनी नदीनो अंधार-काळां नीर अथमा पेरां वेरां वहे छे *

—कवि नानालाल

चिरस्मरणीय रहेगी पवित्र महा शिवरात्रिकी वह सन्ध्या जब पू॰ कस्तूरबाने अपने स्थूल देहका त्याग करके जीव और शिवकी सन्धि स्थापित की और मुक्तमन्तिके अगोचर पथ पर महाप्रयाण किया। मृत्युरूपी नदीके काले गहरे नीरसे पार अुतरकर वे तो प्रभुके परम धाममें परम पदमें जाकर विराजमान हो गयी।

पू॰ कस्तूरबाने अपना सारा ही जीवन अपने पतिकी अिच्छा और आदेशके अनुसार अखिल भारतके चरणोंमें रख दिया था। पतिकी अिच्छासे भिन्न अिच्छा न रखनेवाली पू॰ बाका जीवन अेक महान तपस्या ही था। अेकादशी और दूसरे व्रतोंके सिवा पू॰ बा प्रति सोम वारको शिवजीका व्रत भी रखती थीं। अैसी महान सती साध्वी अपने महाप्रयाणका दिन महा शिवरात्रिके सिवा दूसरा कैसे पसन्द करती!

धन्य थी मेरे जीवनकी वह घड़ी जिस पवित्र दिन मैं पू॰ कस्तूर बासे पहले-पहल मिली। मुझे आज २१ वर्ष बीत गये हैं। प्रथम दर्शनमें ही वात्सल्यसे आकर्षित कर लेनेवाली अुन माताके समीप आत्मीयताकी भावना सहज ही अुत्पन्न हो गयी। सचमुचमें मां-बेटीकी आत्मीयताका मुझे अनुभव हुआ। मेरे परम पूज्य सद्गुरु और पतिदेवको पू॰ बापूजीने पॉल रिशार को फ्रेंचके अनुवादमें सहायक होनेके लिये वहां ठहरनेको

---

* पृथ्वीकी सीमा है। और पृथ्वी पर हो सकनेवाली मुक्तान्तिकी अर्थात् प्रगतिकी भी सीमा है। परन्तु मुक्तमन्ति-मार्ग अवकाशके दूसरे तीर पर है। और दिन दोके बीचमें मृत्युकी नदीका अंधकार-जैसा काला पानी गहरा बह रहा है।

हम सब लौटे आये। बाहरी जीवनमें भी पू. बापूजीके लिये पू. बाका चित कितना आदर रहता था अिसका पता अिस घटनासे लगता है।

आधुनिक दृष्टिसे पू. बा निरक्षरासी भले ही लगें परन्तु वे बड़ी महत्वाकांक्षी थीं। वे सचमुच अपना स्थान और कर्तव्य समझती थीं और अुसका यथोचित पालन करके अिस महान पदकी अुन्होंने प्राप्ति की यह हम सबने देखा। पू. बाका सूक्ष्म जीवन तप त्याग भक्ति आत्म-समर्पण और पतिपरायणताके पांच तत्त्वोंसे पूरी तरह मर्यादित था। और अिन महान तत्त्वोंकी केन्द्रित शक्ति ही बहुत हद तक पू. बापूजीकी दैवी प्रेरणाओं और आत्म-निर्णयोंका कारण थी यह कहनेमें पू. बापूजीके विरल कर्मयोग समदृष्टि सत्यनिष्ठा और आत्म बलके साथ विशेष न्याय होता है। आत्मबलकी प्राप्तिके मूल साधन पू. बापूजीने गृहस्थ-जीवनसे प्राप्त किये थे। और अुस गृहस्थ-जीवनकी संचालिका अुनकी पवित्र सहधर्मिणी पू. कस्तूरबा थी।

पूनामें अेपेंडिसाअिटिसका ऑपरेशन होनेके बाद जिस समय घाव भर रहा था तब पू. बापूजीको लगा कि अब मेरे लिये फलों वगैराका अितना गलत खर्च क्यों हो? पू. बासे अुन्होंने कह दिया कि आपसे मेरे लिये स्ट्रॉबेरी न मंगाओ जाय। डॉक्टरकी सलाहके विरुद्ध पू. बापूजीकी अिस जिदसे पू. बाकी चिन्ताका पार नहीं रहा। अुनके तो मानो प्राण ही सूख गये। श्री देवदासभाअी भी बड़ी चिन्तामें पड़ गये। मेरे पति और मैं दोनों साथ ही थे। मेरे पतिने पू. बासे कहा "आजके दिन तो आप चिन्ता छोड़ दीजिये। यह भार मेरे सिर पर है।" और वे स्वयं स्ट्रॉबेरी ले आये। पू. बापूजीके सामने जब अुचित समय पर स्ट्रॉबेरी रखी गयी तब अुन्होंने कहा "मैंने मना कर दिया था फिर भी यह क्यों?" अुत्तरमें पू. बाने बताया "आपकी अिच्छा बता देने पर भी हरिभाअी आप खुद जाकर ले आये हैं।" जरा भी और पूछताछ किये बिना पू. बापूजीने स्ट्रॉबेरी ले ली और अिसमें जब हमने डॉक्टरोंकी विशेष सहायता लेकर स्ट्रॉबेरी और थोड़े समय तक जारी रखनेको पू. बापूजीको राजी कर लिया तभी पू. बाके जीमें जी आया।

पू० बा हमारे आर्यावर्तकी महा मूल्यवान सम्पत्ति थीं। आर्य-संस्कृति और संस्कारमें समाये हुये गूढ़ मर्मोंका स्पष्ट पाठ्य गई है कि केवल भौतिक धन ही मनुष्यकी सच्ची समृद्धि नहीं। आत्मसिद्धिके मुमुक्षु-वर्गोंको अुपयोगी होनेवाली समृद्धि तो प्रेम भक्ति वैराग्य त्याग स्वार्पण वगैरा साधनोंमें ही होती है। पू० बा अिन साधनोंका भंडार थीं। दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही भारतवर्षकी अिस समृद्धिमें पू० बाके स्वर्गवाससे भारी हानि पहुंची है। पतिव्रतके प्रतापके गौरवसे पूजनेवाला आर्यावर्त साध्वी सतियोंसे जब विहीन होता जा रहा हो अैसे समय पू० बाके अनित्य देहका हमारे चर्मचक्षुओंसे दूर हो जाना अत्यंत शोकमय है। फिर भी विशेष विकास और अुन्नति जिस देहसे देहधारीके बन्धनोंके बीच संभव न हो तो अुसके लिये महाप्रयाणका मार्ग ही श्रेय रहता है। अिसी नियमानुसार पू० बा आज असत्से सत्में तमससे ज्योतिमें और मृत्युसे अमृतमें विचर कर प्रभुके परम सान्निध्यको प्राप्त हुयी है।

सिन्धके दौरेमें मेरे पति और मैं पू० बाके साथ थे। सिन्धके सम्मेलनका सभासन पू० बाने पूरी सफलतासे किया। यह जब हमने देखा तब पू० बाकी सभासन-शक्तिका प्रभाव अच्छी तरह समझमें आया। सम्मेलनके सिवा कभी अलग अलग स्थानोंपर विराट सभाओंका भी पू० बाने सभासन किया था। सफल संचालनके सिवा अेक ही दिन अक्सर अनेक सभाओंमें पू० बाको घंटों तक हिन्दीमें व्याख्यान देते देखकर अच्छी अच्छी विदुषी बहनें भी सिर झुका देती थीं।

जीवन और मृत्यु दोनोंको धन्य बनानेवाली और अुपदेशसे नहीं परन्तु जीवन-व्यवहारमें सनातन गुणों तथा आदर्शोंको अुज्ज्वल करनेवाली पू० कस्तूरबाके बारेमें क्या कोअी भी शुभ व्यक्ति यह कल्पना। मालूम कर सकता कि निरक्षर कस्तूरबा भारतवर्षकी शिक्षाका गर्व नहीं थीं? अनके जीवनमें बुद्धिवाद और तर्कवादका तो स्थान ही नहीं था। अनके हृदयमें प्रत्येक अवसर पर अेक ही भावना रहती थी कि पू० बापूजीकी आत्माको किस कार्यसे सन्तोष होगा। अैसी विचारसरणी दूसरी दिशामें काम कर ही नहीं सकती थी।

बच्चा बापूजीके बिस्तरके पास आकर चला गया। नैनीतालसे आये हुअे कार्यकर्ता पू. बापूजीके आतिथ्यके लिअे वहां रहते थे। अुनमें से अेकने अुस बच्चेको देखा और दूसरे दिन पू. बापूजीको यह बात बताकर अुसी जगहके बजाय अन्दर सोनेका बड़ा आग्रह किया। पू. बापूजी खूब हंसे और अुन्होंने हमेशाकी तरह खुलेमें ही अपना बिस्तर करवाया। पू. बाने भी जो अन्दर सो रही थी अपना बिछौना बाहर करवाया। यह देखकर पू. बापूजी खूब हंसे। अिस प्रकार पू. बाको पू. बापूकी रक्षा करते देखकर मुझे भगवान बुद्ध और सिंहादि प्राणियोंका प्रसंग याद आता था।

पू. बा पुण्यश्लोक बापूजीकी सचमुच ही जीवन-रक्षक देवी थी यह कहनेमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं। स्त्री सृष्टिकी आदिशक्ति है। ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनोंका दिव्य बल जहां असफल रहा वहां जगन्माताने भी महाकाली और दूसरे शक्तिरूप धारण करके देवाधिदेवोंकी रक्षा की है यह चंडीसप्तशतीका सार यही सिखाता है कि स्त्रीकी आद्यशक्तिके बिना पुरुषका बल काम नहीं आता।

पू. बाके खादीके प्रति अगाध प्रेमका प्रसंग भी अुल्लेखनीय है। अेक बार पू. बाके पैरकी [illegible] गूमड़ निकला। पू. बा खादीकी पट्टी बांधने जा रही थीं कि अेक बहनने बारीक कपड़ेकी पट्टी ला दी और कहा "अिस बारीक कपड़ेसे छिलेगा नहीं और पट्टी अच्छी तरह बंधेगी।" अिसके अुत्तरमें यह कहकर कि "मुझे तो खादीकी ही पट्टी चाहिये। वह खुरदरी होगी तो भी मुझे चुभेगी नहीं।" पू. बाने खादीकी ही पट्टी बांधी।

लाहौर कांग्रेसके समय पू. बापूजीने पू. बासे कुछ श्रीमानोंके सामने कहा था "कांग्रेसमें आकर समय गंवानेसे यहीं रहकर कातो तो अधिक अच्छा।" पू. बापूकी अिच्छाका अुल्लंघन [illegible] करके पू. बा सबमें जाकर आनन्दसे चरखा कातने बैठ गयीं। कांग्रेसमें जानेके बजाय श्रीमती [illegible] पू. बापूजीके पास आयीं और पूछा "बा कहीं क्यों दिखायी नहीं देतीं?" श्रीमानोंने [illegible] अधिक [illegible] और [illegible] होती है। अिन बहनोंने पू. बाके [illegible] पू. बापूजीसे ही [illegible] और हम सब पू. बापूजीके साथ ही कांग्रेसमें गये।

लक्ष्मी मान और कीर्तिका मोह जिसका गला घोंट रहा है और उसके हृदयकी सात्विक वृत्तिमें द्वेष और ईर्ष्याका अंकुर जुगाकर सेवाके क्षेत्रमें विष फैला रहा है। ये लक्ष्मी मान और कीर्तिके प्रलोभन सच्ची सेवासे मनुष्यको कितना विमुख करनेवाले तत्व हैं जिसके दृष्टान्त आज पग पग पर हमें मिलते हैं। अपने जीवनको देशसेवा और जन-सेवाके क्षेत्रमें त्याग और तपसे ओतप्रोत कर देनेवाले अपत्य-जैसे पू बापूजी जिस युगमें सबसे श्रेष्ठ महापुरुष हैं। जैसी महान विभूति बापूजीकी अर्धांगिनी बननेकी यथार्थ अधिकारिणी होने पर भी प्रसिद्धि, मान और कीर्तिको न तो पू बाने कभी छूआ और न कभी चाहा। बाके जिस कठोर त्यागकी दृढ़ निश्चलतामें जगतके मानव मनोबल तथा आत्मशक्तिकी चरम सीमा देख सकेंगे।

पू बाकी धर्मग्रंथोंके प्रति भी कम श्रद्धा नहीं थी। साबरमती जेलमें कताओके बाद रामायणका पाठ पू बा मुझसे कराती थीं। जेलमें कभी कभी भारी पाप करके सजा पाओ हुओ बहनें पू बाके पास आती तब वे धैर्य शान्ति और प्रेमसे अुनके अन्तःकरणको शुद्ध बनानेके प्रयत्न करतीं। पू बाको दुष्कृत्योंके प्रति घृणा थी परन्तु अुनके करनेवालोंके प्रति वे हमेशा दयाकी दृष्टिसे देखती थीं।

आश्रमके कड़े नियमोंका यथार्थ पालन करने पर भी पू बा आश्रमवासियोंकी व्यावहारिक असुविधाओंके प्रति (जिनमें कोओ महान सिद्धान्तका प्रश्न न हो) सहानुभूति रखती थी। जैसे ओक प्रसंगकी पुनःस्मृति मुझे तभी अभी बड़ौदेमें साहित्य-परिषदके सम्मेलनके अवसर पर डॉ श्री हरिप्रसाद देसाओने करायी थी। आश्रमकी बहनोंका निश्चित कीमतका साबुनसे काम नहीं चलता था। जिसकी शिकायत थी पाय ना अुसका अब बापूजीके नियमका विरोध ही होता था। तब बहनोंके स्नानागारमें अक प्रार्थनापत्र हमने तैयार किया। जिसमें पू बाने भी हस्ताक्षर करके हमारा साथ दिया और यह अर्जी पू बापूजीको दी गयी। पू बापूजीने मेरी ओर व्यंग करके कहा "अिसमें तो हम बदनाम ही किये गये" फिर भी हँसकर ... हमारी अर्जी मंजूर कर ली।

पू. बाके पास मैं वर्षोंमें ज्यादा न रह सकी, मगर वे जब जब बिहार आतीं तब भरसक मैं ज्यादासे ज्यादा समय अुनके साथ बिताती थी। अेक मौके पर मैं सख्त बुखारमें पड़ी थी। पू. बाका पत्र आया। मैंने अुत्तर लिखवाया अुसमें बताया, "आप जल्दी पहुँचेंगी तब तक जरा ठीक होते ही मैं आ पहुँचूँगी।" परन्तु पू. बाका हृदय कैसे मानता! वे तो तुरन्त गंगा-स्वरूप गंगाबहन वैद्यके साथ मेरा हाल जाननेको मेरे यहाँ दौड़ आयीं और चुपचाप वापस भी चली गयीं। यह निरभिमानपन, यह सरलता और सौजन्य अुनकी कोटिकी कितनी स्त्रियाँ बता सकती हैं?

पू. बाके संस्मरणोंमें से क्या लिखूँ और क्या न लिखूँ, यही मेरे लिये मुश्किल है। जैसा प्रेम लड़की अपनी माँके प्रति रखती है वैसा ही प्रेम मैं पू. बाके प्रति रखती थी। पर वे मुझसे भी अधिक वात्सल्य मुझ पर अुंडेलती थीं। मुझ पर अुनका अपार ऋण है।

पिछले वर्ष पू. बापूजीके अुपवासके आखिरी दिनकी शामको आगाखाँ महलसे निकलते समय मुझे सपनेमें भी खयाल नहीं था कि ये पू. बाके आखिरी दर्शन हैं। पू. बाके शब्द तो बहुत सूचक थे और वे अब भी मेरे कानोंमें सुनाओ पड़ रहे हैं, "बहन अब तो प्रभु जब मिलायेगा तब सही।" वह मायभीनी सजल नयनोंकी विदा अब भी मेरी नजरके सामने ज्योंकी त्यों दिखाओ दे रही है। पू. बा अितनेसे ही न रुकीं। अुन्होंने कहा, "मुझसे सीढ़ियाँ अुतरी नहीं जातीं नहीं तो तुझे थोड़ी दूर तक तो विदा करने आती।" ये प्रेमपूर्ण वाक्य मेरे लिये तो अंतिम साबित हुअे। आखिरी वक्त अुनकी सुश्रूषा नहीं कर सकी, अुनके दर्शन भी नहीं हुअे, अिस विचारमात्रसे हृदयको अपार वेदना होती है। वात्सल्यकी संतानोंकी माता अपनी आखिरी सांस कारागृहमें ले, अिस कल्पनामात्रसे कंपकंपी छूटती है।

पू. बापूजीके पाससे पू. बाको मुक्त करनेमें अीश्वर किस प्रकारकी आहुतियाँ चाहता होगा? पू. बापूजीने अपने सर्वस्वका त्याग कर ही दिया था। पू. बा पू. बापूजीकी सेवा करके जीवनकी सार्थकता मानती थीं और पू. बापूजी अुन भक्तिपूर्ण सेवाको स्वीकार करते थे। शायद भगवानकी दृष्टिमें सर्वस्वके दानमें त्यागमें कुछ न कुछ अपूर्णता मालूम